ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 02 जनवरी 2020

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 02 फरवरी 2020 से 08 फरवरी 2020

माघ शु. – 08 ● वि० सं०–2076 ● वर्ष 62, अंक 05, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 195 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,120 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. सेक्टर-49, गुरुग्राम में पूनम की पाठशाला

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सेक्टर–49, गुरुग्राम में 'पूनम की पाठशाला, कक्षा–1' नामक कार्यशाला का आयोजन भव्य रूप से किया गया, जिसमें डी.ए.वी. कालेज मैनेजमेंट कमेटी व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी ने गुरुग्राम के डी.ए.वी. विद्यालय के सभी शिक्षकों को संबोधित किया। इस कार्यशाला में सम्मिलित होने के लिए डी.ए.वी. गुरुग्राम के तीन सौ से भी अधिक शिक्षक और उनके प्रधानाचार्य वहाँ उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम में अतिथि के रूप में यू जी सी के पूर्व चेयरमैन प्रो. वेद प्रकाश जी, डी.ए.वी., सी.एम.सी. के जनरल सेक्रेटरी श्री आर. एस. शर्मा जी, वाइस प्रेसिडेंट श्री प्रबोध महाजन जी, मुंजाल शोवा लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री योगेश मुंजाल जी सहित विभिन्न विद्यालयों की प्रधानाचार्या तथा एल.एम.सी. के मुख्य सदस्य उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ भजन–गायन तथा कक्षा गायत्री मंत्र तथा ईश्वर स्तुति उपासना मंत्रों का उच्चारण करते हुए किया गया। विद्यालय के चेयरमेन श्री प्रबोध महाजन जी के द्वारा मुख्य अतिथि पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी का स्वागत किया गया।

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

आर्य युवा समाज, डी.ए.वी. रादौर ने गरीब बच्चों व महिलाओं की सेवा की

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल रादौर में आर्य युवा समाज के बैनर तले नव वर्ष के उपलक्ष्य में छात्रों द्वारा एकत्रित सामग्री कंबल, शॉल, जूते, जुराब व अन्य गर्म वस्त्र झुग्गी–झोपड़ियों में रहने वाले 200 गरीब बच्चों व महिलाओं को भेंट किये गए। इस कार्यक्रम में स्कूल के सभी बच्चों व स्टॉफ सदस्यों ने उत्साहपूर्ण भाग लिया। इस अवसर पर विद्यालय द्वारा गरीब बच्चो व महिलाओं को उनके लिए उनके जरूरत के कंबल, शाल व अन्य गर्म वस्त्र दिए गए।

प्रिंसिपल श्री रमन शर्मा ने बताया के आर्य युवा समाज डी.ए.वी. स्कूल सामाजिक क्षेत्र में इस प्रकार के अनेक सामाजिक कार्य प्रत्येक वर्ष करता है। इस वर्ष भी जन सेवा का यह कार्य किया गया जिससे लोगों व बच्चों में दान, दया तथा सहयोग आदि के भाव उत्पन्न हों तथा वे दूसरों की सहायता के लिए सदैव तैयार रहें। आर्य समाज का यही उद्देश्य रहा है कि बच्चों को गुणात्मक शिक्षा के साथ–साथ उत्तम कोटि के संस्कार भी दिए जा सकें।

इस अवसर पर प्रिंसिल श्री रमन शर्मा ने सभी आये हुए बच्चों व स्त्रियों को शिक्षा का महत्त्व बताते हुए उनको बच्चों को पढ़ाने के लिए प्रेरित किया।

डी.बी.एन. अजमेर में आर्य युवा समाज के तत्वावधान में भजन संध्या

डी.बी.एन. विद्यालय, अजमेर में ईश्वर स्मरण हेतु भजन संध्या का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुंभारभ वेदमंत्रोचार, दीप प्रज्ज्वलन कर सरस्वती वंदना से किया गया। इस अवसर प्रधानाचार्य श्री नवनीत ठाकुर ने मुख्य अतिथि श्री लक्ष्मीकांत शर्मा प्राचार्य डी.ए.वी. कॉलेज, अजमेर का स्वागत किया।

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री नवनीत ठाकुर ने अपने उदबोधन में आज के युग में भजन संध्या का महत्व बताया और कहा ईश्वर के भजनों में बहुत बडी शक्ति होती है।

आर्य युवा समाज के विद्यार्थियों ने ओम है जीवन हमारा ओम प्राणाधार है, ओम नमो नमो........ वेदो का डंका आलम में फहरा दिया ऋषि दयानन्द ने......., युगों युगों से चमके सूरज चांद सितारे आदि भजनों की प्रस्तुति दी।

भजन संध्या में अधिकांशतः विद्यार्थियों के (दादा–दादी व नाना–नानी) आदि वरिष्ठजनों ने – सुमिरन कर ले मेरे मन......, ओम नाम के हीरे मोती......, भज लो प्यारे ओम का नाम आदि पर अपनी प्रस्तुति देकर वातावरण को भक्तिमय कर दिया। जयपुर से पधारे संगीतज्ञ श्री राधाबल्लबजी द्वारा भजन जो छोटा बने वो हरि पाए.... की प्रस्तुति देकर व तबला वादक श्री शफात हुसैन तबले की धुन से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

मुख्य अतिथि श्री लक्ष्मीकांतजी प्राचार्य डी.ए.वी. कॉलेज अजमेर ने – प्रभु आपकी कृपा से सब काम हो रहा..... भजन द्वारा कार्यकम में समां बांध दिया।

कार्यक्रम का समापन शांति पाठ के साथ किया गया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ७

संपादक – **पूनम सूरी**

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 02 फरवरी 2020 से 08 फरवरी 2020

वाणी के सलिल में स्नान

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

ऋतेन गुप्त ऋतुभिश्च सर्वैः, भूतेन गुप्तो भव्येन चाहम्।
मा मा प्रापत् पाप्मा मौत मृत्युः , अन्तर्दधेऽहं सलिलेन वाचः।।
अथर्व 17.1.28

ऋषिः **ब्रह्मा।** देवता **आदित्यः।** छन्दः **त्रिष्टुप्।**

● **(अहं)** मैं **(ऋतेन)** सत्य से **(च)** और **(सर्वैः)** सब **(ऋतुभिः)** ऋतुओं से **(गुप्तः)** रक्षितज **[होऊँ]**, **(भूतेन)** अतीत से **(भव्येन च)** और भविष्यत् से **(गुप्तः)** रक्षित **[होऊँ]**। **(पाम्पा)** पाप **(मा)** मुझे **(मा)** मत **(प्रापत्)** प्राप्त हो, **(मा उत) न ही (मृत्युः)** मृत्यु **[प्राप्त हो]**। **(अहं)** मैं **(वाचः)** वेदवाणी के **(सलिलेन)** सलिल से, ज्ञानामृत से **(अन्तः दधे)** [स्वंय को] आच्छादित कर देता हूँ।

● मैं अ–सुरक्षा के सन्त्रास से व्याप्त इस जगत् में सर्वात्मना रक्षित रहना चाहता हूँ। पर रक्षा का उपाय क्या है? सहस्त्रों सैनिकों को अपने चारों ओर सन्नद्व करके भी मैं वैसी रक्षा प्राप्त नहीं कर सकता, जैसी स्वयं नैतिक नियमों में बंधकर तथा आत्म–बल को जगाकर पा सकता हूँ। सर्वप्रथम मैं 'सत्य' से रक्षित होऊँ। मनुष्य बहुधा अपनी रक्षा के लिए 'असत्य' का अवलम्बन करता है। वह सोचता है कि असत्य कहकर मैं अपराध के दण्ड से बच जाऊँगा। पर असत्य छिपता नहीं। अपराधी को अपराध का दण्ड तो मिलता ही है, असत्य–भाषण का अतिरिक्त दण्ड भोगना पड़ता है। इसके विपरीत सत्य बोलकर अपना अपराध स्वीकार कर लेने पर वह क्षमा का पात्र हो जाता है। मैं ऋतुओं से भी रक्षित होऊँ। ग्रीष्म, बर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर, वसन्त, छहों ऋतुएँ व्यवस्थित रूप से आकर प्रकृति के कार्य–कलाप का चारुता के साथ निर्वाह करती हैं। इन ऋतुओं से शिक्षा लेकर मैं भी अपने कार्य को यथासमय करने की आदत डालूँ, तो मैं भी रक्षित रह सकता हूँ। यदि मैं अपने राष्ट्र के उज्ज्वल अतीत से शिक्षा लेकर वर्तमान को उज्ज्वल करने का व्रत लूँ, तो अतीत भी मेरा रक्षक बन सकता है। उज्ज्वल भविष्य की कल्पना करके उसे मूर्तरूप देने के प्रयास द्वारा 'भव्य' को भी मैं अपना रक्षक बना सकता हूँ।

पाप मुझे न प्राप्त हों। यदि मैं दृढ़ता धारण लूँ कि किसी भी अवस्था में पाप के वशीभूत नहीं होऊँगा, तो पाप सदा मुझसे दूर रहेगा। परिणामतः नैतिक दृष्टि से मैं सुरक्षित रहूँगा। मृत्यु भी मुझे न प्राप्त हो। यों तो जिसने जन्म लिया है वह मृत्यु से ग्रस्त होता ही है, किन्तु जब भी चाहे अकाल मृत्यु आकर हमें ग्रस ले तो हम सर्वथा असुरक्षित रहते हैं। अतः सुरक्षा के लिए अकाल मृत्यु से बचना आवश्यक है। अन्त में आत्मरक्षार्थ मैं वाणी के सलिल से, वेदवाणी के ज्ञानामृत से, स्वयं को अच्छादित करता हूँ। जैसे शीतल–पवित्र जल का पान और उसमें स्नान श्रम और सन्ताप को मिटाकर हमारी रक्षा करता है, वैसे ही वेदवाणी के पवित्र ज्ञान–सलिल में स्नान भी हमारे अज्ञान–मूलक दुःख–द्वन्द को हरकर हमारा रक्षक बनता है। अतः मैं वेदवाणी के निर्मल ज्ञान–सरोवर में डूबकी लगाता हूँ और सब भीतियों से रहित, सब अविद्याओं से मुक्त तथा सब कर्त्तव्य–बोधों से स्फूर्ति पाकर पूर्ण सुरक्षित हो जाता हूँ।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

प्रभु दर्शन

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पूज्यपाद महात्मा आनंदस्वामी जी महाराज इस देश के धार्मिक क्षेत्र के एक उज्ज्वल नक्षत्र थे। उनका व्यक्तित्व ही ऐसा था कि नाम सुनते ही मानों कान में आनंद का शहद घुलने लगता है। एक ऐसा व्यक्तिव जिसे देखते ही आनंद और संतोष से हाथ जुड़ जाएँ। महात्मा आनंदस्वामी ने आनंद का यह धन अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक झोलियां भर–भर का बांटा।

पाठकों के आग्रह पर महात्मा आनंदस्वामी जी की अमरकृति **'प्रभु दर्शन'** को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत संतोष और आनंद प्राप्त रहा हो रहा है। यह महत्वपूर्ण ग्रंथ स्वामी जी ने संन्यास आश्रम में प्रवेश कर लेने पर गंगोत्री तट पर बैठकर लिखा था। इस अंक में आत्म–निवेदन के रूप में हम पढ़ेंगे कि आनंदस्वरूप भगवान के संसार में इतना दुःख क्यों है? इस प्रश्न के उत्तर में उपनिषद् को ऋषियों की क्या घोषणा है? ऋषि दयानंद का इस विषय में क्या आदेश हैं?

–संपादक

आत्म–निवेदन

योग द्वारा आत्म–दर्शन ही परम धर्म है। 1939 से 1950 ग्यारह बरस बीत गये। ग्यारह बरस पहले मैं गुलबर्गा (हैदराबाद दक्षिण) के एक कारावास का वेदसबन्दी था। ग्यारह बरस बाद मैं संसार के रमणीकतम प्रदेश का स्वच्छन्द पंछी हूं। कर्त्तव्य की जो पुकार मुझे काराओं के भीतर खींच ले गई थी, वही पुकार मुझे इन उत्तुङ्गहिन आच्छादित गिरि–शिखरों पर विरचने के लिए विवश कर रही है। हैदराबाद की निज़ामशाही ने जनता के नागरिक तथा धार्मिक अधिकारों को चुनौती दी थी। आर्यसमाज ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए अपने हज़ारों वीरों को इस धर्म–संग्राम में जूझने का आहुति आदेश दिया था। इन वीरों के साथ आहुति देनेवालों में भी एक सैनिक था। हिसात्मक संग्राम का सैनिक तलवार से तलवार को रोकता है, परन्तु हमारा संग्राम अहिंसात्मक था। अहिंसात्मक संग्राम का सैनिक तलवार की धार पर पर चलता है। गुलवर्गा जेल तलवार थी, इनकी धार पर चलते हुए मैंने जो कुछ पाया, उसे अपने तक ही सीमित रखता तो स्वार्थपरता का दोषी होता। स्वर्गीय पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी के संसर्ग में जो पाया, वह 'प्रभु–भक्ति' के रूप में आस्तिक जनता को भेंट कर दिया। इस पुस्तक का जनता ने हार्दिक स्वागत किया। अब तक इसके दस संस्करण छप चुके है।

'प्रभु–भक्ति' राह थी, प्रभु को पाने की। प्रभु अर्थात् अनन्त, असीम, अकथ, आनन्द, सुख, समृद्धि, शान्ति। परन्तु इन ग्यारह वर्षो में संसार आनन्द तथा सुख की राह पर नहीं, क्लेश और दुःख की राह पर बढ़ा है। यह नहीं कि संसार ने आनन्द और सुख के मार्ग पर बढ़ने का प्रयत्न नहीं किया, इन ग्यारह वर्षो में घटी घटनाओं को इतिहास के पन्नो में कुरेदिये तो केवल परिवर्तन ही नहीं, अनेक महान् क्रान्तियां झांकती हुई झलकती हैं। इन ग्यारह वर्षो में दुनिया ही बदल गई। गुलामी की दलदल से निकलकर अनेकों देश आज़ादी के शिखर पर पहुंच गए। अनेक अन्य देश अपनी स्वाधीनता खोकर पराधीनता के गढ़े में जा गिरे। राज बदले, प्रजा बदली, शासक बदले, शासित भी बदल गये। इन्हीं ग्यारह वर्षो में संसार का दूसरा महायुद्ध हुआ। वह महायुद्ध भी एक प्रयत्न था–संसार में शान्ति स्थापित करने का। भौतिक विज्ञान के पाश्चात्य पुजारियों की अद्भुत धारणा है कि युद्ध से शान्ति हो सकती है; मृत्यु से जीवन मिल सकता है। भारत में भी कुछ ऐसी ही घटना। कुछ लोगों में समझा, बँटवारे से मिलाप हो सकता है। और भी लोग है, जो सर्वनाश से नवसृष्टि की सम्भावना करते हैं। यह भूलकर कि वे कल तक दूसरे के साथी थे, उन्होंने कन्धे से कन्धा मिलाकर एक साझे शत्रु को पराजित किया था, वे नई गुटबन्दियों के साथ कृत्रिम प्रलय की तैयारियां कर रहे हैं।

राह गलत हो, प्रयत्न अवश्य हुआ –परिणाम–**'मर्ज बढ़ता गया, ज्यों–ज्यों दवा की।'** संसार के कष्ट कम नहीं हुए; बढ़े। भुखमरी, अन्न–संकट, बाढ़ और भूकम्प तो दैवी प्रकोप हैं। मानव के अपने मन में असन्तोष, ईर्ष्या और बैमनस्य की इतनी आग धधकी कि सारा संसार इनकी लपेट में आ गया। शारीरिक और आत्मिक, दोनों तरह के कष्ट बढ़ गए।

शेष पृष्ठ 06 पर ☞

चंचल मन–चल ओम् शरण

● महात्मा चैतन्यस्वामी

परमात्मा न्यायकारी है अतः वह हमारे कर्मों के आधार पर ही न्याय करता है। उसकी न्याय–व्यवस्था में जरा सी भी भूल–चूक होने की कोई संभावना नहीं है और न ही परमात्मा किसी की सिफारिश आदि से हमारे पाप–कर्मों को क्षमा करता है। अपने पुण्य कर्मों के आधार पर ही परमात्मा ने हमें यह मानव–शरीर प्रदान किया है। वेद में कहा गया है–**विभक्तारंᳬ हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः। सवितारं नृचक्षसम्।।** (यजु. 30–4) परमात्मा ने हमें हमारे कर्मानुसार यह शरीर तो दिया ही मगर साथ में और क्या कुछ दिया यह भी चिन्तन करने की बात है। परमात्मा ने आत्मा को दो प्रकार के करण (उपकरण) दिए हैं। पाँच कर्मेन्द्रियाँ और पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ ये बाह्यकरण तथा मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार (स्व–स्मृति) ये अन्तःकरण दिए हैं। अब हमारा यह दायित्व है कि इन बाह्य एवं अन्तःकरण का सदुपयोग करके अपने जीवन को भद्रता से परिपूर्ण करें। वेद हमें आदेश देता है–

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं
पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गै स्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि
देवहितं यदायुः।।
(सा.1874)

(**देवाः**) ज्ञान–ज्योति देने वाले विद्वानों! आपकी उपदेश वाणियों से हम (**कर्णेभिः**) कानों से (**भद्रं**) कल्याण व सुखकर शब्दों को ही (**शृणुयाम**) सुनें। (**यजत्राः**) अपने संग व ज्ञानदान से हमारा त्रण करने वाले विद्वानों! (**अक्षभिः**) हम प्रभु से दी गई इन आंखों से (**भद्रम्**) शुभ को ही (**पश्येम्**) देखें। हम कभी किसी की बुराई को न देखें... (**स्थिरैः अंगैः**) दृढ़ अंगों से तथा (**तनूभिः**) विस्तृत शक्ति वाले शरीरों से (**तुष्टुवांसः**) सदा प्रभु का स्तवन करते हुए, उस आयु को (**व्यशेमहि**) प्राप्त करें, (**यत् आयुः**) जो जीवन (**देवहितम्**) देव के उपासन के योग्य है अर्थात् जो अपने कर्त्तव्यों को करने के द्वारा प्रभु की अर्चना में बीतता है.... गत पृष्ठों में हमने भद्र सुनने और भद्र देखने की चर्चा की है। अब हम अन्तःकरण का सदुपयोग करने की चर्चा करेंगे। परम दयालु परमात्मा ने हमें अन्तःकरण (मन, बुद्धि, चित्त और अंहकार) के रूप में जो न्यामत दी है, उसका मूल्य आंकना असंभव सा ही है। अन्तःकरण का एक मुख्य उपकरण–'**मन**' है। वास्तव में यह मन ही (**मनसः वलायकः असि**) आत्मा को समस्त इन्द्रियों के साथ जोड़ने वाला है। हमारी ज्ञानेन्द्रियों के गोलक तब–तक अपना कोई कार्य नहीं कर पाते हैं जब–तक कि मन उनके साथ नहीं जुड़ता है... यह मन ही साधना द्वारा आत्मदर्शन कराने वाला है। अथर्ववेद में कहा गया है–

इदं सवितर्वि जानीहि षड्यमा
एक एकजः।
तस्मिन्हापित्वमिच्छन्ते य
एषामेक एकजः।।
(अथर्व. 10–8–5)

हे जीव! तू यह समझ ले कि पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और एक मन ये छः परस्पर जोड़े के रूप में रहने वाले हैं। अकेली आँख नहीं देखती बल्कि वह मन से मिलकर ही देखने वाली बनती है, कान स्वयं नहीं सुनते बल्कि मन के साथ जुड़कर ही कान सुन पाते हैं...मन को साधने से व्यक्ति जीवन की समस्त उपलब्धियों को प्राप्त कर सकता है, चाहे वे भौतिक हों या आध्यात्मिक। मन के दो ही कार्य हैं–संकल्प या विकल्प। व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने मन को कभी भी कोई विकल्प न दे बल्कि अपने मन को सदा संकल्प के साथ ही जोड़े रखे...वेद में अनेक ही मन्त्र ऐसे हैं जिनमें इस मन की अपार शक्तियों का विवेचन किया गया है। यजुर्वेद (यजु.34–1से 6) में मन को जागते हुए ही (**यज्जाग्रतो दूरमुदैतिदैवं**) नहीं बल्कि सोते–सोते भी दूर जाने वाला कहा गया है। मन को (**हृत्प्रतिष्ठिम्**) ह्रदय में प्रतिष्ठित, (**सुसारथि**) उत्तम सारथी, (**दैवम्**) दिव्यता से परिपूर्ण तथा 'देव' अर्थात् आत्मा का प्रमुख साधन कहा है अर्थात् जैसे आँख रूप का उपकरण है वैसे ही मन आत्मदर्शन का उपकरण है। आगे इस मन को (**प्रज्ञानम्**) प्रज्ञानम् कहा है अर्थात् प्रकृष्ट ज्ञान मन के बिना प्राप्त नहीं हो सकता है। इसी के संयुक्तत्व में आँख देख सकती है, कान सुन सकते हैं और आत्मदर्शन भी केवल मन ही करवा सकता है, (**चेतः**) इस आत्म–चेतना का साधक तो मन ही है, (**धृतिश्च**) यह मन ही धैर्य का साधन है...कहा भी गया है–मन के हारे हार है मन के जीते जीत। (**अमृतं ज्योतिः**) अमरत्व की ज्योति देने का साधन भी यह मन ही है...वायु निरन्तर वेग से चलता रहता है मगर पृथ्वी के परिधि–मण्डल पर आकर रुक जाता है, जल प्रवाह निरन्तर बहता है मगर समतल भूमि पर रुक जाता है, वैसे ही मन भी असीम परमात्मदेव के चिन्तन में जाकर रुक जाता है...

उपरोक्त विवेचन से हमें मन की अपार शक्तियों की जानकारी प्राप्त हुई, इस दृष्टिकोण से मन हमें मुक्ति भी दिला सकता है और बन्धन में भी डाल सकता है। कहा भी गया है–**मन एव मनुष्याणाम् कारणं बन्ध मोक्षयोः।** अर्थात् मन ही हमें सांसारिक बन्धनों में बान्धता है और यही मुक्ति तक भी पहुँचा सकता है। उपनिषदों में पंच कोषों की विशद् चर्चा की गई है तथा उन पाँच कोषों में एक '**मनोमय कोष**' है। मन मानों एक टर्निंग प्वाईंट है क्योंकि इसके बाद हमारा प्रवेश विज्ञानमय कोष में होता है। वास्तव में व्यक्ति को अपने मन को साधने की आवश्यकता होती है...मन अत्यधिक चंचल है बल्कि चंचलता तो मन का स्वभाव ही है। जो साधक यह जान जाए कि यह चंचलता वास्तव में मन का दुर्गुण नहीं बल्कि गुण है वह इसे साधने में समर्थ हो जाता है क्योंकि इससे उसे मन की कमजोरियों के साथ–साथ उसके अनुपम गुणों का भी पता चल जाता है। यदि मन को समग्रता के साथ न समझा जाए तो व्यक्ति की स्थिति ठीक अर्जुन जैसी ही हो जाती है–

चचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि
बलवद् दृढ़म्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।।
(गीता 6–34)

अर्जुन श्रीकृष्णजी से कहते हैं कि यह मन बड़ा चंचल है, मथ डालने वाला है, बलवान् है, हठी है। मैं तो मानता हूँ कि उसका निग्रह करना वायु को वश में करने के समान दुष्कर है, कठिन है। अर्जुन की इस समस्या का समाधान योगीराज इस तरह करते हैं–

अयंशय महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।।
(गीता 6–35)

हे महाबाहु! निस्सन्देह मन का निग्रह करना बड़ा कठिन है, यह चंचल है, किन्तु हे कुन्ती। के पुत्र अर्जुन! वह अभ्यास तथा वैराग्य से वश में किया जा सकता है। श्री कृष्णजी ने मन को वश में करने का जो उपाय बताया है वही उपाय महर्षि पतंजलि जी भी अपने योगदयोगदर्शन में बताते हैं–'**अभ्यास वैराग्यभ्याम् तन्निरोधः**(1–12)' यहाँ भी अभ्यास और वैराग्य ही मन को साधने का उपाय बताया गया है। मानसिक अभ्यास दो प्रकार का है–पहला एकाग्रता अर्थात् एक समय में एक ही विषय पर विचार करना और दूसरा निरोध अर्थात् स्तब्धता... कोई भी संकल्प–विकल्प आदि न उठने देना। ये अभ्यास बहुत सुगमता एवं सहजता के साथ तब हो पाते हैं यदि मन में गहरे वैराग्य के भाव निरन्तर बने रहें... वैराग्य के सम्बन्ध में महर्षि जी का कथन है–'जो विवेक से सत्य असत्य को जाना हो उसमें से सत्याचरण का ग्रहण और असत्याचरण का त्याग करना वैराग्य है...' इस पंक्ति से हम यह बताना चाहते हैं कि उनकी दृष्टि में विवेक के आधार पर ही व्यक्ति वैराग्य की ओर बढ़ सकता है क्योंकि तभी वह क्षणिक सुखों या सांसारिक भोगों की क्षणभंगुरता को समझ सकेगा।

स्थिरं मनश्चकृषे जात इन्द्र वेषीदेको
युधये भुयसश्चित्।
अश्मानं चिच्छवसा दिद्युतो वि विदो
गवामूर्वमुस्त्रियाणाम्।।
(ऋ. 5–30–4)

हे (**इन्द्र**) जितेन्द्रिय पुरुष! तू (**जातः**) प्रभु की उपासना से विकसित शक्तियों वाला होकर (**मनः**) अपने मन को (**स्थिरम्**) स्थिर, शान्त, विषयों में न भटकने वाला (**चकृषे**) करता है। मन को स्थिर करके तू (**एकः इत्**) अकेला ही (**भुयसः चित्त्**) संख्या में कितने ही अधिक हजारों शत्रुओं के साथ (**युधये**) युद्ध के लिए (**वेषीत्**) गतिवाला होता है... उन पर आक्रमण के लिए उनकी ओर जाता है। (**अश्मानम् चित्त्**) इस अविद्या पर्वत को भी (**शवसा**) शक्ति के द्वारा (**विदिद्युतः**) विच्छिन्न करता है। इस अविद्या पर्वत को विनष्ट करके (**उस्त्रियाणाम्**) ज्ञानदुग्ध को देने वाली (**गवाम्**) इस वेदवाणी–रूप गौवों के (**ऊर्वम्**) समूह को (**विदः**) प्राप्त करता है।

उपरोक्त मन्त्र का भाव यह है–कि उपासना से मन एकाग्र होता है। एकाग्र मन वासनाओं को पराजित करता है। इस मन के द्वारा अविद्या का नाश होकर खूब ज्ञान की वृद्धि होती है...अथर्ववेद में (अथर्व. 10–7–37) बहुत सुन्दर प्रसंग आया है कि–**कथं न रमते मनः।** अर्थात् यह मन कहीं भी स्थिरता से रमता नहीं...और फिर आगे के मन्त्रों में बताया गया कि वास्तव में मन की यह दौड़ प्रभु प्राप्ति के लिए ही है...वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति किसी सुख, शान्ति और आनन्द की तलाश में है...मगर सांसारिक भोगों में उसे वह उपलब्धि प्राप्त नहीं होती है इसलिए व निरन्तर उस आनन्द की तलाश में ही लगा रहता है...संभवतः यही मन का भटकाव है...अन्यथा जिस प्रकार पृथिवी और अन्तरिक्ष के अन्तराल में एक ऐसा स्थान आता है जहाँ वेगवान् वायु भी रूक जाता है इसी प्रकार परमात्मा के आनन्द में मन भी रुक जाता है...समस्या मन को सही दिशा में लगाने की ही होती है. ..मर्यादा पुरुषोतम श्रीरामचन्द जी महाराज अपने गुरु ब्रह्म–ऋषि वशिष्ठ जी के पास यही समस्या लेकर जाते हैं कि महाराज इस अति चंचल मन को कैसे रोका जाए? श्री राम के इस प्रश्न में कही गई बात को महामना वशिष्ठ जी भी स्वीकार करते हैं कि हे राम यह मन वास्तव में ही बहुत चंचल है क्योंकि चंचलता इसका धर्म है, इस मन के बारे में वे कहते हैं–**नेह चंचलता हीनं मनः क्वचन दृश्यते। चंचलत्वं मनो धर्मो वन्हे धर्मो यथोष्णता।। अप्यब्धि पानान्महतो सुमेरून्मूलनादपि। अपिवन्ह्यशनात् साधो विषमश्चित्तनिग्रहः।।** हे राम! इस ब्रह्माण्ड में चंचलता से शून्य मन तो कहीं भी नहीं दीख पड़ता है। चंचलता मन का ऐसा धर्म है जैसे अग्नि का धर्म उष्णता है...समुद्र को पी डालने से, सुमेरू पर्वत को उखाड़ने या फिर दहकते हुए अंगारों को निगल लेने से भी इसका निग्रह अत्यन्त कठिन है...मगर इतना कहने के बाद वशिष्ठ जी ने मन को वश में करने की एक अद्‌भुत तकनीक भी बता दी। वे कहते हैं कि हे राम माना कि मन को रोकना कठिन है मगर '**मन एव समर्थ वो मनसो दृढ़निग्रहे।**' अर्थात् यह मन ही मन का दमन करने में समर्थ है।

वशिष्ठजी ने बहुत ही महत्त्वपूर्ण और मनोवैज्ञानिक रहस्य का उद्घाटन किया है। इस मन के द्वारा ही मन की चंचलता को सही दिशा प्रदान की जा सकती है। इसे ही हथियार बनाकर इसे चित किया जा सकता है। मन की चंचलता को रोकने के लिए कुछ बातों को गहराई से समझने की जरूरत है। इस सम्बन्ध में दो बातें प्रमुख हैं। पहली तो यह कि मन अपने आप में जड़ वस्तु है तथा जड़ वस्तु में कहीं भी इधर–उधर स्वयं जाने की शक्ति नहीं हो सकती है। मन यदि चंचल होता है तो उसका कारण मन नहीं बल्कि व्यक्ति स्वयं हैं क्योंकि मन तो है ही जड़। वह कहीं ऐसे स्थान पर नहीं जा सकता जहां हम उसे न भेजना चाहें। यदि हम न जाने

शेष पृष्ठ 09 पर

नेताजी के आज 123वें जन्म दिवस पर

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने महान बलिदान देकर देश को स्वतन्त्र कराया

● मनमोहन कुमार आर्य

देश को आज़ादी दिलाने में अगणित लोगों ने बलिदान दिये हैं। सबके बलिदान महान् व नमन करने योग्य हैं। कुछ ऐसे नेता भी होते हैं जिनका योगदान कम परन्तु प्रचार अधिक होता है। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ऐसे नेता नहीं थे। उनका बलिदान भी महान् था और उन्होंने देश को स्वतन्त्र कराने के लिये जो कार्य किये वह भी महान् एवं नमन करने योग्य हैं। उन जैसे चरित्रवान् देशभक्त नेता देश के इतिहस में बहुत कम हुए हैं जो प्रचार से महान् नहीं बने अपितु अपने श्रेष्ठ कामों व देश के लिये बलिदान की भावना रखने से महान् बने हैं। नेताजी सुभाषचन्द्र जी का जन्म 23 जनवरी सन् 1897 को कटक में हुआ था। इनके पिता श्री जानकीनाथ बोस एवं माता श्रीमती प्रभावती दत्त थी। नेता जी का विवाह आस्टिया मूल की नारी इमिल सेहनकी जी से 1934 में हुआ था। इन्होंने नवम्बर, 1942 में जर्मनी में एक पुत्री को जन्म दिया था जिसका नाम अनीता बोस है और जो वर्तमान में लगभग 77 की आयु में जर्मनी में ही निवास करती हैं।

16 अगस्त सन् 1945 में ताइवान में एक वायुयान दुर्घटना में उनकी मृत्यु हुई, ऐसा कहा जाता है परन्तु बहुत से देशभक्तों का अनुमान है कि नेताजी इस वायुयान दुर्घटना में मरे नहीं थे। वह इसके बाद भी जीवित रहे और देश के किसी आश्रम में रहते हुए उच्चस्तरीय आध्यामिक महापुरुष का जीवन व्यतीत करते थे। जिस प्रकार से अरविन्द घोष क्रान्तिकारी होकर आध्यात्म के मार्ग पर चले थे उसी प्रकार से नेताजी भी ताइवान की घटना के बाद भारत में पहुंच कर किसी आश्रम में आध्यात्मिक योग ध्यान एवं समाधि की साधना करते हुए समाज से अपनी वास्तविकता को छिपाते हुए विलीन हो गये। सन् 1945 में उनकी आयु मात्र 48 वर्ष 5 माह की ही थी। देहरादून के राजपुर क्षेत्र में किशनपुर में एक स्थान पर एक महात्मा जी कई कई दिन की समाधि लगाते थे। जब उनकी मृत्यु हुई तो वहाँ नेताजी के एक मित्र श्री उत्तम चन्द मल्होत्रा भी विद्यमान थे। वह लोगों को बता रहे थे कि यह मृतक ईश्वर का उपासक कोई और नहीं अपितु नेताजी सुभाषचन्द्र बोस थे। हम भी उस दिन उस अवसर पर वहाँ उपस्थित थे। बाद में उस मृतक शव को हरिद्वार या ऋषिकेश में ले जाकर राजकीय सम्मान के साथ पंचतत्वों में विलीन कर दिया गया था।

23 जनवरी को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का 123 वाँ जन्म दिवस है। नेताजी जब तक भारत में रहे वह कांग्रेस के सबसे अधिक, शायद गाँधी और नेहरु जी से भी अधिक, लोकप्रिय नेता थे। देश की आज़ादी के बाद की सरकारों ने उनके देश की आज़ादी में योगदान के अनुरूप उन्हें सम्मान नहीं दिया। ऐसा अनुभव सभी देश प्रेमी करते हैं। कांग्रेस दल के कुछ बड़े नेताओं के विरोध के कारण, जबकि वह कांग्रेस के अध्यक्ष थे, उन्होंने वीर सावरकर जी की प्रेरणा से विदेश में जाकर देश की आज़ादी के लिये कार्य करने का निर्णय किया था। जब वह देश से निकले उस समय वह अंग्रेज़ों द्वारा हाउस अरेस्ट किये हुए थे। वहां से चलकर वह जर्मनी पहुँच गये थे। जर्मनी पहुंच कर वह वहाँ अंग्रेज़ों के शत्रु एवं विश्व प्रसिद्ध शासक एडोल्फ हिटलर से मिले थे और उनसे भारत की आज़ादी में सहयोग करने का प्रस्ताव किया था। उनका नैतिक व आर्थिक समर्थन उनको प्राप्त हुआ था। उन्होंने भारत की आज़ादी के लिये आज़ाद हिन्द फौज (आई.एन.ए) का गठन किया था। इसमें जापान का सहयोग भी प्राप्त हुआ था। इस आज़ाद हिन्द फौज ने अंग्रेज़ों पर पूर्वी भारत की ओर से आक्रमण कर उनकी सत्ता को चुनौती दी थी। नेताजी के कार्यों में देश के राजनीतिक दल कांग्रेस पार्टी से जो सहयोग व समर्थन मिलना चाहिये था, वह उनको नहीं मिला। **आज़ाद हिन्द फौज ने देश को आज़ाद कराने के लिये नेताजी के नेतृत्व में जो आन्दोलन, संघर्ष, युद्ध व लड़ाई लड़ी, उसने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को भारत का सबसे अधिक लोकप्रिय नेता बना दिया था। आज भी उनकी प्रसिद्धि उनके समकालीन अनेक बड़े नेताओं से कहीं अधिक है। नेताजी देश की प्रबुद्ध जनता के हृदय में विराजमान हैं और उनका सम्मान व पूजा करते हैं।** हम यह भी अनुमान करते हैं कि यदि देश की आज़ादी के समय नेताजी राजनीति में सक्रिय होते और किसी प्रकार से नेताजी और सरदार पटेल सहित वीर सावरकर आदि में से किसी एक या तीनों को सामूहिक रूप से देश की सत्ता प्राप्त हुई होती तो भारत आज विश्व का सबसे उन्नत एवं सबसे बलशाली देश बनता। यह हमारे निजी विचार हैं। ऐसा होना सम्भव था क्योंकि इन नेताओं को देश को किस ओर ले जाना है, यह स्पष्ट था और यह लोग कभी भी वोट बैंक की राजनीति न करते जिससे देश में समरसता एवं एक देश, एक विधान एवं सबको समान रूप से बिना भेदभाव के न्याय प्राप्त होता। ऐसा होने पर ऋषि दयानन्द सरस्वती को उनके देशहित के कार्यों व सर्वहितकारी वैदिक विचारधारा को भी उचित सम्मान प्राप्त हो सकता था। इतिहास में किन्तु परन्तु के लिये कोई स्थान नहीं होता। जो हुआ वह हमारे सामने है। आज देश का सौभाग्य है कि नेताजी सुभाष चन्द बोस का अनुयायी एवं उनको उचित सम्मान देने वाला प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी देश चला रहा है।

नेताजी ने अंग्रेज़ों पर पूर्वी भारत की ओर से जो आक्रमण किया था, उसमें उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हुई। इस पर भी वह रूस आदि के सहयोग से अपने काम को जारी रखे हुए थे। ताइवान की घटना के बाद वह लापता हो गये। सरकारी दृष्टि से उनको मृतक मान लिया गया था। देश के उनके भक्त उन्हें जीवित भी मानते रहे हैं। जो भी हो अब वह संसार में नहीं हैं। अब यदि वह होते तो 122 वर्ष के होते। हमारा अनुमान है कि नेताजी आज़ादी के बाद देहरादून के राजपुर क्षेत्र में किशनपुर में एक साधारण से निवास स्थान पर रहे थे। लगभग 50 वर्ष पूर्व वहाँ उनका निधन हुआ था। मृत्यु होने के बाद हम भी उस स्थान पर पहुँचे थे। उन दिनों अध्ययन के साथ हम समाचार पत्र के हॉकर का काम भी करते थे। उस क्षेत्र के घरों व कोठियों में हम कई महीनों से समाचारपत्र दिया करते थे। वहाँ वृद्ध उत्तम चन्द मल्होत्रा आदि लोग, जो नेताजी से जुड़े रहे थे, उस स्थान पर एकत्र हुई जनता को बता रहे थे कि वह मृतक संन्यासी जो कई कई दिन की समाधि लगाता था, वह नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जी ही थे। इस स्थान पर रहते हुए वह किसी से मिलते नहीं थे। भोजन कराने वाला व्यक्ति भोजन बना कर रख जाता था और कुछ घंटों बाद बर्तन उठा कर ले जाता था। जहाँ उनका निवास था उसके साथ ही जंगल व झाड़ियाँ थीं। जो कभी किसी सम्भावित पुलिस कार्रवाई होने पर भागने व छुपने में सहायक थी। इस प्रकार की बातें हमें स्मरण हो रही हैं जो मल्होत्रा जी वहाँ कह रहे थे। बाद में हमने सुना था कि प्रशासन ने उन्हें ऋषिकेश या हरिद्वार ले जाकर पुलिस की बन्दूकों से सलामी देते हुए अन्त्येष्टि संस्कार कराया था। यह सब बातें हमारे निजी अनुभव की हैं। सत्य क्या था यह कहना सम्भव नहीं है परन्तु अनुमान तो यही था कि वह व्यक्ति नेताजी हो सकते थे।

नेता जी सन् 1920 से 1930 के बीच भारत राष्ट्रीय कांग्रेस की युवा शाखा के नेता थे। वह सन् 1938 में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने थे तथा सन् 1939 तक कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। गाँधी जी से मतभेदों के कारण उन्होंने सन् 1939 में कांग्रेस छोड़ दी थी। इसके बाद अंग्रेज़ों ने उनको घर पर नजरबन्द किया था जहाँ से वह सन् 1940 के अंग्रेज़ी अधिकार वाले भारत को छोड़कर विदेश चले गये थे और कुछ समय बाद जर्मनी पहुँच गये थे। नेताजी अप्रैल सन् 1941 में जर्मनी पहुँचे थे। वहाँ के नेताओं की ओर से भारत की आज़ादी के लिये उनको अप्रत्याशित सहानुभूति, समर्थन व सहयोग प्राप्त हुआ था। **नवम्बर, 1941 में जर्मनी से प्राप्त आर्थिक सहायता से उन्होंने बर्लिन में आज़ाद भारत केन्द्र की स्थापना की थी। इसके साथ ही वहाँ आज़ाद भारत रेडियो भी स्थापित किया गया था जहाँ रात्रि समय में नेताजी का सम्बोधन प्रसारित हुआ करता था।** जर्मनी में रहते हुए नेताजी को भारत की आज़ादी के लिये कार्य करने के लिये अनेक प्रकार से सहयोग मिला।

आज़ाद हिन्द फौज के गठन में नेताजी को जापान का सहयोग प्राप्त हुआ था। नेताजी ने जापान के सहयोग से जापान के उपनिवेश अण्डमान एवं निकोबार में भारत की आज़ाद सरकार भी बनाई व चलाई थी। यह कोई कम बड़ी उपलब्धी नहीं थी। नेताजी देश के बहुप्रतिभासम्पन्न एवं करिश्माई व्यक्तित्व वाले नेता थे। नेताजी ने ही देश को **''जय-हिन्द''** तथा **''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा''** का नारा वा स्लोगन दिया था जो आज़ादी के आन्दोलन में बहुत लोकप्रिय हुआ। आज नेताजी के 123 वें जन्मदिवस पर हम उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। नेताजी अमर हैं और सदा अमर रहेंगे। ओ३म् शम्।

196 चुक्खूवाला-2
देहरादून-248001
फोन: 9412985121

आनन्द का स्रोत परमेश्वर है

● डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

परमेश्वर की शरण में जाने से आनन्द की प्राप्ति होती है वही शान्ति है, तृप्ति है, न कोई भय, न चिन्ता, न ही मोह ममता, न कोई बन्धन है, वही परम सुख व परम ऐश्वर्य की प्राप्ति है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त जीवन भर सांसारिक बन्धनों में बंधा रहता है, एक बेचैनी बनी रहती है कि आगे भविष्य में शान्ति मिलेगी, आराम मिलेगा, सुख मिलेगा परन्तु सुख शान्ति अन्तिम समय तक भी नहीं मिलती। प्रातः से सायं तक काम का बोझ धन कमाने की इच्छा कि अधिक से अधिक धन एकत्र कर लूँ, कहीं इससे आराम मिलेगा, सुख–सुविधा के सामान जुटाता है कि इससे आराम मिलेगा फिर भी आराम नहीं मिलता। कोठी, कार, बाग–बगीचे भी मिल जाये, संसार की अथाह सम्पत्ति सुख–सुविधा मिल जाए फिर भी मन विचलित ही रहता है, छटपटाता रहता है, वह आत्मा की तलाश अन्तः मन की इच्छा होती है जो यहाँ की भौतिक सुविधाओं से पूर्ति नहीं होती, वह इच्छा पूर्ति परमात्मा की प्राप्ति से ही होती है, जहाँ जाकर या जिससे मिलकर आनन्द ही आनन्द मिलता है, हमें उस परमात्मा की प्राप्ति हेतु ही प्रयत्न करना चाहिए। मिथ्या भाषणादि पाप कर्म छोड़, सत्य भाषणादि धर्माचरण करें, सत्पुरुषों का संग करते रहें, धर्माधर्म कर्त्तव्याकर्त्तव्य का निश्चय कर मुक्ति के साधन जुटाने से परमात्मा की प्राप्ति होती है। वास्तविकता तो यही है कि यह मनुष्य जीवन ही मुक्ति अर्थात् परमेश्वर से मिलने व आनन्द प्राप्ति हेतु मिलता है, वह आनन्द भौतिक सुखों में नहीं मिलता। एक कथानक है कि जब ऋषि याज्ञवल्क्य वन जाने लगे तो अपनी दोनों पत्नियों कात्यायनी तथा मैत्रेयी जी ब्रह्मवादिनी थी, से कहने लगे कि 'मैं वन जाने से पूर्व अपनी सम्पत्ति को आधा–आधा तुम दोनों को दे जाऊँगा जिससे तुम दोनों मेरे बाद अपना जीवन काट सको। इस पर ब्रह्मवादिनी मैत्रेयी ने कहा महाराज धन–सम्पत्ति से मैं अमर नहीं हो सकूँगी, मुझे वह दीजिए जिससे मैं अमर हो सकूँ। याज्ञवल्क्य ऋषि बोले वह ब्रह्म विद्या ही है जिससे अमरता प्राप्त होती है। यहाँ कहने का तात्पर्य है कि परमेश्वर ही अमरता व आनन्द का स्रोत है, परमेश्वर की शरण से ही आनन्द मिलता है।

परमेश्वर की प्राप्ति से ही आनन्द मिलता है जैसे एक बालक घर भूलकर नगर की गलियों में भटकता फिरे, रो–रोकर बुरा हाल कर लेता है, इस समय उसे विभिन्न वस्तुएँ दी जाए जैसे खिलौने, भोजन, दूध, मिष्ठान्न आदि परन्तु उनसे वह सन्तुष्ट नहीं होता। इस प्रकार गलियों में भटकते हुए सायंकाल को रास्ते में उसे उसकी माता मिल जाए तो उसकी प्रसन्नता की सीमा नहीं रहती, वह माँ की गोद में चिपट जाता है, रोना बन्दकर शान्त हो जाता है, विशेष तृप्ति हो जाती है, सब दुख भूल जाता है, ठीक वैसे ही जीवात्मा है–जन्म भर वह जिसके लिए बेचैन रहती है, एक जन्म फिर दूसरा पश्चात् अन्य जन्म परन्तु तृप्ति कहीं नहीं मिलती। हम मनुष्य जीवन में परेमश्वर से मिलने के साधन करते है, बन्धनों से छूट कर ही उस परमानन्द को प्राप्त कर सकते हैं, वही अलौकिक आनन्द है। सप्तम् समु. सत्यार्थ प्रकाश में कहा है– **'मुञ्चन्ति प्रथग्भवन्ति जना यस्या सा मुक्तिः'** अर्थात् दुःखों से छूटकर जीव ब्रह्म में आनन्द से रहता है उसे ऐसे ही आनन्द की अनुभूति होती है जैसे बालक अपनी माँ की गोद में आते ही सब दुःखों को भूल जाता है। ईश्वर की शरण में जाकर ही शान्ति की प्राप्ति होती है।

वह परमात्मा हमारा माता–पिता है, हमें उसे कदापि नहीं भूलना चाहिए, यह मनुष्य जीवन मिला है, यह उस परमेश्वर ने दिया है अतः उस परम पिता परमात्मा की आज्ञा का पालन करते रहना चाहिए, दुर्व्यसन जैसे अधर्म, कुसङ्ग, कुसंस्कार, बुरे व्यसनों को दूर कर सत्य भाषण, परोपकार, विद्या, पक्षपात रहित न्याय, धर्म की वृद्धि करने, परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना अर्थात् योगाभ्यास करने, विद्या पढ़ने–पढ़ाने और धर्म से पुरुषार्थ कर ज्ञान की उन्नति करने, सबसे उत्तम साधनों को करने और जो कुछ करे वह सब पक्षपात रहित न्याय धर्मानुसार करे। ऐसे साधनों से ही मुक्ति मिलती है यदि इससे विरुद्ध आचरण करेंगे तब मोक्ष तो मिलेगा नहीं अपितु बन्धन में फँसे रहेंगे और पुनः पुनः जीवन–मृत्यु में आते–जाते रहेंगे। मुख्य बात अपने आचरण को श्रेष्ठ बनाना सुधारना तभी तो मोक्ष की प्राप्ति मिल सकेगी और परमात्मा की गोद में वह अलौकिक आनन्द मिल सकेगा और वह आनन्द ऐसा होगा कि जहाँ न कोई चिन्ता, न भय, न मोह, न ईर्ष्या व द्वेष, न कोई धन कमाने की इच्छा होगी, न कोई झंझट, एक ही साथी, वही पिता–माता, वही मित्र, एक परमात्मा होगा उसकी शरण में पूर्ण शान्ति, पूर्ण तृप्ति होगी, जीवन भर जो मनुष्य कभी किसी कभी किसी चाह मोह इच्छा के लिए भटकता फिरता है वह यही है परमेश्वर की गोद, जहाँ सब इच्छाएँ पूर्ण हो जाती है।

आइए उस परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना नित्य प्रति करें उसमें ही प्रीति बढ़ाएँ, अब प्रीति ऐसे तो बढ़ती नहीं उसका गुणगान करें, उसके गुण, कर्म, स्वभाव को याद करें अर्थात् उस परमेश्वर की स्तुति किया करें। सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में लिखा है "वह परमात्मा सबमें व्यापक शीघ्रकारी और अनन्त बलवान् जो शुद्ध, सर्वज्ञ, सबका अन्तर्यामी, सर्वोपरि विराजमान, सनातन स्वयं सिद्ध परमेश्वर अपनी जीव रूप सनातन अनादि प्रजा को अपनी सनातन विद्या से यथावत् अर्थों का बोध वेद द्वारा कराता है 'स. प्र. सप्तम समु.'

परमात्मा के गुणों को याद करें जो सगुण स्तुति और जैसे परमात्मा का कोई आकार नहीं, जन्म नहीं लेता, उसमें कोई छिद्र नहीं नाड़ी आदि के बन्धन में नहीं रहता, यह निगुर्ण स्तुति कहलाती है। परमात्मा के गुण कर्म स्वभाव की स्तुति कर हम अपने गुण, कर्म व स्वभाव को सुधार सकते हैं। जैसे वह दयालु, कृपालु, उपकार करने वाला, शुद्ध पवित्र न्यायकारी व पक्षपात नहीं करता, हम भी वैसे ही हों। हम परमेश्वर के स्वरूप को जानेंगे, उसके गुणों को अपने में धारण करने का प्रयत्न करते रहेंगे और उसके अनुसार अपने चरित्र को श्रेष्ठ बनाएँगे। परमेश्वर सबके लिए सुख चाहता है, सब शारीरिक आत्मिक रूप से उन्नति शील हों, हम प्रशंसा उसकी ही करते हैं जो सर्वश्रेष्ठ हो। परमात्मा सबसे श्रेष्ठ है। सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है। जैसा कि आर्य समाज के दस नियमों में यह दूसरा नियम है हम उस परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करते हैं। स्तुति का अर्थ है–प्रशंसा अर्थात् गुणों को याद करना, हमें किसी के गुणों का ज्ञान है तभी तो उन्हें याद करेंगे। वह परमात्मा दयालु न्यायकारी है, पवित्र है, पूर्णज्ञानी है। हमें स्तुति में इन गुणों को याद करना चाहिए, परमात्मा जैसा कि न्यायकारी है, दयालु है, सबकी भलाई करने वाला पवित्र व ज्ञानी है, हम भी वैसे ही बनें, संसार का उपकार करें। हमारी इन्द्रियाँ पवित्र हों, बुद्धि श्रेष्ठ, हो कर्मशील हो। अन्याय न करें, पक्षपात न करें, बुराइयों से बचें, इस प्रकार की स्तुति से हमें परमात्मा के गुणों, कर्म व स्वभाव का ज्ञान तो होता ही है, अपने भी गुण, कर्म व स्वभाव को श्रेष्ठ बनाते चलते हैं। हमारे आचरण अच्छे हों। अतः जीवन में परमेश्वर का ध्यान करना आवश्यक है, उसके लिए उसके गुणों को याद करना आवश्यक है। अब जब हमें पता है कि परमेश्वर दयालु ज्ञानवान सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी आदि गुणों वाला है जो जैसे गुण वाला है उसके पास ही तो हम जाऐंगे और हमें उस वस्तु की आवश्यकता है तो उसके पास जाकर विनती अर्थात् प्रार्थना करेंगे अर्थात् हे प्रभु हमें भी ज्ञानवान् कर, बलवान बना दे, प्रभुन सबका भला करने वाला है, हम भी सबकी भलाई करें, उपकार करें, ऐसी प्रार्थना करनी चाहिए। संसार के सुख की कामना करनी चाहिए। वह परमात्मा सबका सुख व हित चाहता है अतः हमें कभी किसी के अहित या बुरा करने की प्रार्थना नहीं करनी चाहिए, ऐसी प्रार्थना परमेश्वर नहीं सुनता, कर्मानुसार सबको फल देता है। यदि कोई हम पाप करें, बुरा कार्य करें तो उसका फल भी निश्चित देगा, क्षमा नहीं करेगा, स्तुति से परमेश्वर में हमारी लगन लगेगी, परमात्मा में प्रेम बढ़ेगा, हमारे गुण, कर्म स्वभाव में सुधार होगा, आचरण अच्छा होगा। प्रार्थना करते हैं तो हाथ जोड़ कर नेत्र बन्द करके सिर (मस्तक) झुका कर करते हैं। इससे अभिमान जैसा दुर्गुण भी दूर हो जाता तथा नम्रता, सुशीलता, मधुरता आती। जीवन श्रेष्ठ बन जाता है।

प्रार्थना दूर से तो होती नहीं, परमेश्वर के पास उसकी शरण में बैठकर होती है–इसे ही उपासना कहते हैं। हम ईश्वर के समीप या ईश्वर हमारे समीप है, सर्वान्तर्यामी है, हमारे अन्दर आत्मा व मन में भी है। शरीर के किसी अंग भृकुटि के मध्य हृदय, पीठ, नाभि कहीं भी ध्यान स्थित रख परमेश्वर को याद करते हैं। अविद्यादि दोष दूर हों, जब आत्मा परमात्मा में चित्त को लगाती है तो एक सुखद अनुभूति होती है।

उपासना से परब्रह्म से योग हो, उसका साक्षात्कार होता है। सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास में कहा है–जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है वैसे ही परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष, दुख छूटकर परमेश्वर के गुणकर्म स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हो जाते हैं।

ईश्वर का ध्यान इसीलिए अत्यावश्यक है कि हम अपने गुण, कर्म, स्वभाव को श्रेष्ठ बना सकते हैं। अपने आचरणों को सुधार सकते हैं। समस्त बुराइयों को छोड़कर हम अच्छे गुण ग्रहण कर ही मनुष्य कहने योग्य हो सकते हैं। वैदिक धर्म हमें अन्धकार से प्रकाश को ओर ले जाता है। बुराइयों को दूर कर अच्छाइयों की ओर ले जाता है। परमात्मा सृष्टिकर्ता है, पवित्र है, सर्वश्रेष्ठ है। विद्वान् उसकी इसीलिए उपासना करते व उसका ही ध्यान करते हैं। हम भी नित्य प्रति संध्योपासना अग्नि होत्र करें व जीवन को एक आदर्श बनाएँ।

गली न. 2, चन्द्र लोक कॉलोनी,खुर्जा
मो. 8979794715

परम आनन्द प्राप्ति की चार अवस्थाएँ

● खुशहाल चन्द्र आर्य

आत्मा के लिए परम आनन्द की प्राप्ति निम्नलिखित चार अवस्थाएँ हैं।

(1) सुषुप्ति अवस्था (2) परोपकारी कार्य (3) समाधि (4) मोक्ष

लेख आरम्भ करने से पहले यह बतलाना अति आवश्यक है कि सुख और आनन्द में क्या अन्तर होता हैं? सुख में दो अक्षर है 'सु' और 'ख'। 'सु' का अभिप्राय होता है अच्छा और 'ख' का अभिप्राय होता है इन्द्रियाँ यानी जो अपनी पाँच ज्ञानेन्द्रियों को अच्छा लगे वह सुख होता है जैसे जिह्वा को स्वादिष्ट भोजन अच्छा लगता है, कानों को सुरीला भजन अच्छा लगता है, आँखों को मनमोहक दृश्य अच्छा लगता है। त्वचा को आनन्ददायक स्पर्श अच्छा लगता है, इसी प्रकार नाक को सुगन्धित महक (सुगन्ध) अच्छी लगती है। ये सब सुख हैं जो शरीर सम्बन्धी विषय है। परन्तु आनन्द शरीर का विषय ने होकर आत्मा का विषय है यानी जिस काम को करने से आत्मा को प्रसन्नता होती है वह आनन्द होता है। गहरा व लम्बा आनन्द परम् आनन्द कहलाता है। क्षणिक प्रसन्नता या आनन्द, केवल आनन्द कहलाता है। जैसे कभी–कभी सोचते समय प्रसन्नता होती है जो क्षणिक है वह आनन्द कहलाती है। परमानन्द प्राप्ति की ऊपर लिखी हुई चार अवस्थाएँ हैं, उनका संक्षिप्त विवरण इसी भाँति है–

1. सुषुप्ति अवस्था – जब कभी मनुष्य को लम्बे समय तक आनन्दमयी, सुखदायक निद्रा आती है तो वह उठकर कहता है कि आज तो सोने में बड़ा आनन्द आया। ऐसी गहरी नींद में जो आनन्द की अनुभूति होती है। वह परम् आनन्द कहलाता है।

2. परोपकारी कार्य – जब मनुष्य कोई अच्छा काम करता है जैसे स्कूल बनवाता है, धर्मशाला बनवाता है, कुआँ खुदवाता है, कोई अनाथालय बनवाता है, किसी भूखे को रोटी देता है या प्यासे को पानी पिलाता है अथवा भूले–भटके को रास्ता बतलाता है तब आत्मा में एक विशेष किस्म के आनन्द की अनुभूति होती है और जब इस अच्छे परोपकारी कार्य की कोई प्रशंसा करता है तब भी आत्मा को एक विशेष प्रकार के आनन्द की अनुभूति होती है। वह परम आनन्द कहलाता है।

3. समाधि – अष्टांग योग के आठ अंग हैं जिनमें पहले सात अंग यम (सत्य, अहिंसा, अस्तेय यानी चोरी न करना, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह यानी संचय न करने की प्रवृत्ति) यह पाँच यम अन्दर की शुद्धि के लिए हैं, दूसरा नियम (शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, व ईश्वर प्रणिधान) यह पाँच नियम बाहर की शुद्धि के लिए है। तीसरा आसन, चौथा प्राणायाम, पाँचवाँ प्रत्याहार, छठा धारणा, सातवाँ ध्यान। इन सात अंगों को पार करके जब मनुष्य आठवें अंग समाधि में पहुँचता है और वह ईश्वर के प्रति पूर्ण आस्थावान् हो जाता है तब उसे जो आनन्द प्राप्त होता है, वह भी परम् आनन्द कहलाता है।

4. मोक्ष – जब मनुष्य अपने स्वार्थ को छोड़ जीवन भर परमार्थ यानी परोपकार के काम करता है यानी अपने जीवन भर स्वाभाविक कार्य खाना–पीना, सोना–जागना, ओढ़ना–पहनना तथा सन्तान पैदा करना आदि स्वार्थ के काम छोड़कर बाकी नैमित्तिक सब काम जिनका फल ईश्वर देता है उन सभी कामों को परोपकार की भावना से करता है वह मनुष्य मरने के बाद मोक्ष यानी ईश्वर के सान्निध्य में एक लम्बे समय तक जिसकी अवधि **31 नील 10 खरब व 40 अरब वर्ष है** परम आनन्द को प्राप्त करता हुआ रहता है।

अब समझने की बात यह है कि सृष्टि को तीन तत्त्व चलाते हैं। ईश्वर, जीव और प्रकृति। तीनों ही अनादि व अनन्त हैं यानी इन तीनों सत्ताओं का न कोई आरम्भ है और न कोई अन्त है। इस सृष्टि को ईश्वर ने जीव को उनके अच्छे–बुरे कर्मों का फल अच्छे व पुण्य कर्मों का फल सुख के रूप में और बुरे कर्मों का फल दुःख के रूप में देने के लिए प्रकृति के अणु–परमाणुओं से यह सृष्टि रची। इसमें प्रकृति सत् है यानी इसकी सत्ता है पर यह जड़ है, दूसरी सत्ता है जीव जो सत् और चित है यानी जिसकी सत्ता भी है और चेतनता यानी गति भी है, तीसरी सत्ता है ईश्वर, वह सत्, चित और आनन्द का सागर भी है यानी ईश्वर की सत्ता भी है, वह चेतन भी है यानी गति भी है और आनन्द का भण्डार है इसीलिए ईश्वर को सच्चिदानन्द भी कहते हैं। ईश्वर ऊपर है, जीव बीच में है और प्रकृति नीचे है। जीव जब बुरे कर्म करता है तो वह नीचे प्रकृति की ओर जाता है जिसमें भोग है। तब जीव भोग में फँस कर वह बार–बार जन्म लेता है और मृत्यु को प्राप्त होता है। इस प्रकार आवागमन में फँसा रहता है। भोग में क्षणिक सुख है पर दुःख अधिक है इसलिए जीव दुःखों में फँसा रहता है। जब जीव अच्छे कर्म करता हुआ ऊपर की तरफ जाता है तो उसे ईश्वर की प्राप्ति होती है जिसके पास आनन्द ही आनन्द है। इस प्रकार जीव यानी मनुष्य जब अच्छे कर्म करता है और अष्टांग योग द्वारा आनन्द की प्राप्ति करता है और मृत्यु के बाद मोक्ष प्राप्त करता है जिसमें ऊपर लिखी अवधि तक ईश्वर के सान्निध्य में रहकर परम् आनन्द की प्राप्ति करता रहता है और मोक्ष की अवधि के बाद पुनः धरती पर आकर मनुष्य योनि में जन्म लेता है।

अब यहाँ यह जानने की बात है कि योनियाँ दो किस्म की होती है। एक भोग योनि और दूसरी कर्म योनि। पशु–पक्षी, कीट–पतंग, वनस्पति आदि भोग योनि है। इसमें केवल जीवन जीने के लिए ज़रूरी काम खाना–पीना, सोना–जागना, उठना–बैठना तथा सन्तान पैदा करना आदि काम जीव करता है। उसका जीव को कर्म का फल नहीं मिलता। दूसरी कर्म योनि है जिसका अच्छे बुरे कर्मों का अच्छा या बुरा फल मिलता है। मनुष्य योनि भोग व कर्म दोनों योनि है। कर्म भी दो किस्म के होते हैं, स्वाभाविक और नैमित्तिक। स्वाभाविक कर्म खाना–पीना, सोना–जागना, इन कर्मों का मनुष्य को कोई फल नहीं मिलता। नैमित्तिक कर्म वह होते हैं जो सीखने से जाने जाते हैं। अच्छे व बुरे कर्म सभी नैमित्तिक कर्म है। ये सीखने से जाने जाते हैं। इनका फल ईश्वर अच्छे कर्मों का फल सुख के रूप में और बुरे कर्म का फल दुःख के रूप में, मनुष्य को देता है। दूसरी प्रकार के कर्म तीन प्रकार के होते हैं। हम जो कर्म कर रहे हैं उनको क्रियमाण कर्म कहते हैं। जो कर्म चुके हैं उनको कृत कर्म कहते हैं और जो कर्म करेंगे उनको करिस्माण कर्म कहते हैं। हम तीनों कर्मों में जिनका फल हाथों हाथ मिल गया, वे कर्म समाप्त हो गये। जैसे किसी ने चोरी की और उसको चोरी के अपराध के छः महीनों की कैद हो गई तो यह बुरा कर्म यहीं समाप्त हो गया। जिन कर्मों का फल हाथों–हाथ नहीं मिलता, उनको संचित कर्म कहते हैं। संचित कर्मों का फल ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अनुसार कभी भी मिल सकता है। इस जीवन में भी और आगे के अनेक जन्मों में मिल सकता है। यह ईश्वर की न्याय–व्यवस्था पर आधारित है। इस प्रकार कर्म की संक्षिप्त व्याख्या तथा परम आनन्द की संक्षिप्त व्याख्या करके लेख को यही विराम देते हैं।

180 दो तल्ला, महात्मा गांधी रोड
कोलकाता–700007

☞ पृष्ठ 02 का शेष

प्रभु दर्शन

इनका कारण?

निश्चित रूप में यह है कि संसार के प्रयत्न गलत दिशा में है। इन प्रयत्नों में कोई मौलिक त्रुटि है, अन्यथा इन भागीरथ प्रयत्नों के बाद, जिनके लिए मानव को इतना अधिक मोल चुकाना पड़ा, संसार में शान्ति हो जानी चाहिए थी। मैंने इस बात पर विचार किया। विचार करते हुए अनुभव किया कि सही मार्ग खोजने के लिए जिस तप की आवश्यकता है, मुझमें उसकी कमी है। तब मैंने संन्यास लेने का निश्चय किया। पिछले बरस के आखिरी महीने की पहली तारीख को दर्शनाचार्य श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज के आश्रम यमुनानगर, जगाधरी में पहुँचकर मैंने धन, यश और परिवार की इच्छा को त्यागकर संन्यास की दीक्षा ले ली और आत्मदर्शन तथा आत्मचिन्तन के लिए देहरादून से तीन मील के अन्तर पर नाला–पानी के घने जंगल 'तपोवन' में जा बैठा। इस घने जंगल में मैंने पहले भी कई बार साधना की है। इस बार एक दृढ़ संकल्प के साथ में साधनालीन हुआ। छः महीने तक निरन्तर साधना करते हुए मैंने देश की वर्तमान अवस्था का अध्ययन किया। देश के बाहर भी निगाह दौड़ाई। आर्यसमाज, सनातन धर्म कांग्रेस, हिन्दू महासभा, समाजवादी दल, साम्यवादी दल आदि सभी आन्दोलनों तथा विचारधाराओं का विश्लेषण किया। संसार की बड़ी–बड़ी शक्तियाँ–अमेरिका, रूस, ब्रिटेन आदि के कार्यक्रमों को तर्क के तराजू पर तोला और बुद्धि की कसौटी पर परखा। सभी का ध्येय एक है–संसार में शान्ति का राज्य हो। इसी कामना से सभी प्रयत्न कर रहे हैं, परन्तु सफलता किसी को भी नहीं मिल रही। यदि कभी क्षणिक सफलता मिलती भी है, तो असफलता के दुर्गन्धयुक्त कीचड़ से लथपथ। क्या संसार में सफलता मिल ही नहीं सकती? क्या संसार दुःख का दूसरा नाम है? क्या सुख और शान्ति काल्पनिक जगत् के स्वप्न में हैं?

क्रमशः

अंग्रेज़ों और मुसलमानों के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द के विचार

● कृष्ण चन्द्र गर्ग

महर्षि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन – द्वारा युधिष्ठिर मीमांसक – प्रथम भाग

10 अगस्त 1878 को महर्षि दयानन्द की तरफ से मौलवी मुहम्मद कासिम अली को यह विज्ञापन दिया गया था – कभी वह भी समय था जबकि मजहबी विषयों में बातचीत व शास्त्रार्थ होने पर लोगों के सिर कट जाते थे। और ऐसा भी समय था कि एक मत के अतिरिक्त दूसरे के मत के विषय में किसी प्रकार का प्रवचन करना या व्याख्यान देना मानो प्राणों को खो देना था। और ऐसे भी दिन थे कि जो राजा का मज़हब होता था, उसके अनुयायी तो प्रत्येक प्रकार से स्वतन्त्र होते थे, परन्तु क्या साहस कि दूसरे मतवाला अपने सिद्धान्तों को प्रकट कर सके। लाख अपने मन में कोई सत्य को सत्य क्यों न जाने, परन्तु झूठ को झूठ कहने का अधिकार न रखता था। सारांश यह कि सत्य की खोज करने वाले और झूठ को झूठ सिद्ध करने वाले सुलेमान के कारागार में नहीं, तो उनके पीछे होने वाले राजाओं के कारागार में तो अवश्य डाले जाते थे। हज़ार–हज़ार धन्यवाद ईश्वर का है कि अब अंग्रेज़ी सरकार ने अपनी न्यायप्रियता से प्रजा को स्वतन्त्रता प्रदान की। जिस बात को मनुष्य अपने बुद्धि बल से प्रमाणित समझता था, उसको प्रकट करने का ढंग भी उत्पन्न हो गया। सत्य तो यही है कि न्यायकारियों और अन्वेषकों को तो मानो एक सम्पत्ति हाथ लगी है।

(पूर्ण संख्या 188)

23 नवम्बर 1880 को थियोसौफिकल सोसायटी की मैडम ब्लैवास्तिकी को पत्र में महर्षि दयानन्द लिखते हैं – मैं परमात्मा को धन्यवाद देता हूँ कि जो हमने आपस के विरोध, फूट, अनाचार करने, जैन तथा मुसलमान आदि की पीड़ा और भ्रम जाल से कुछ–कुछ अलग स्वास्थ्य और स्वतन्त्रता प्राप्त की है कि जिससे मैं वा अन्य सज्जन लोग अपना–अपना सत्य अभिप्राय युक्त पुस्तक रचने, उपदेश करने और धर्म में स्वाधीनपन से आनन्द में प्रवृत्त हो रहे हैं। क्या जो श्रीयुत भारतेश्वरी महारानी, पार्लियामेण्ट सभा और आर्यावर्त देशस्थ राज्याधिकारी धार्मिक विद्वान् और सुशील न होते तो क्या मेरा व अन्य का मुख प्रफुल्लित होकर व्याख्यान, वेदमत प्रचारक पुस्तकों की व्याख्या करनी भी दुर्लभ न होती? और आज तक शरीर भी बचना कठिन न था, इसीलिये पूर्वोक्त महात्माओं को हम लोग धन्यवाद देते हैं।

(पूर्ण संख्या 500)

महर्षि दयानन्द चरित – लेखक बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय,

प्रकाशक – विजयकुमार गोविंदराम हासानंद, दिल्ली, संस्करण 2001

स्वामी जी पटना में एक मास रहे और 3 अक्तबूर 1872 को बेगमपुर के स्टेशन से मुँगेर के लिए रेल पर सवार हो गये। रात्रि के बारह बजे जब गाड़ी जमालपुर जंक्शन पर पहुँची तो मुँगेर की गाड़ी के छूटने में एक घण्टे की देर थी। स्वामी जी मात्र कौपीन धारण किये प्लेटफार्म पर टहलने लगे। एक अंग्रेज़ इन्जीनियर और उसकी पत्नी प्लेटफार्म पर खड़े थे। मेम साहब को एक नंगे साधु को टहलते हुए देखकर बुरा लगा। उसके पति ने स्टेशन मास्टर को स्वामी जी के पास भेजा कि इस साधु को टहलने से रोक दो। वह तो जानता था कि साधु कौन है। वह डरता–डरता गया और उसने कहा कि महाराज ! आप कुर्सी पर आराम कीजिए, अभी गाड़ी छूटने में देर है। स्वामी जी समझ गये कि उसे गोरे साहब ने भेजा है कि हमें टहलने से रोक दे। उन्होंने स्टेशन मास्टर से कहा कि साहब से कह दो कि हम उस युग के लोग हैं जब बाबा आदम और बीबी हव्वा अदन के उद्यान में नंगे रहने में तनिक भी लज्जा नहीं करते थे। स्वामी जी ने टहलना जारी रखा। स्टेशन मास्टर ने साहब से जाकर कहा कि हुजूर वह कोई भिखमँगा तो है नहीं जिसे प्लेटफार्म से निकाल दूँ। वह एक स्वतन्त्र संन्यासी है जो मुझे और आपको कुछ भी नहीं समझता। नाम पूछने पर स्टेशन मास्टर ने महाराज का नाम बताया तो साहब ने कहा कि क्या प्रसिद्ध सुधारक दयानन्द यही है। इसके पश्चात् वह स्वामी जी के पास गया और जब तक गाड़ी छूटने का समय हुआ तब तक उनसे बात–चीत करता रहा।

(पृष्ठ 214)

सन् 1872 में भागलपुर में एक दिन एक सुशिक्षित मौलवी स्वामी जी से धर्म सम्बन्धी वाद–प्रतिवाद करने के लिए आया। स्वामी जी ने उसे कहा कि हिन्दुओं में जो मुसलमानों के प्रति सहानुभूति का अभाव और द्वेष का भाव है उसका कारण यह नहीं है कि हिन्दुओं को मुसलमानों से निसर्गजात द्वेष है, वास्तव में उसका कारण हिन्दुओं के प्रति मुसलमानों का व्यवहार ही है।

(पृष्ठ 217)

सन् 1874 में मुम्बई में अनेक अंग्रेज़ कर्मचारी स्वामी जी से मिलने और उनके व्याख्यान सुनने आया करते थे और उनकी प्रशंसा करते थे। स्वामी जी अंग्रेज़ी राज्य की बहुत प्रंशसा किया करते थे। इसी कारण से बहुत से लोग उन्हें अंग्रेज़ों का गुप्तचर कह दिया करते थे। 1874 में नासिक में स्वामी जी ने यह भी कहा कि भारत में सही अर्थों में अंग्रेज़ ही ब्राह्मण हैं।

(पृष्ठ 277, 268)

सन् 1877 में सहारनपुर में पर्दा प्रथा पर बोलते हुए महर्षि दयानन्द ने कहा – स्त्रियों को पर्दे में रखना अनुचित है, यह नहीं है कि बिना पर्दे के स्त्रियाँ सदाचारिणी नहीं रह सकतीं, पर्दे में भी पाप होते हैं। बिना विद्या–प्राप्ति के सदाचारी नहीं हो सकता। पर्दा मुसलमान राजाओं के समय में प्रचरित हुआ, क्योंकि वे जिस किसी की बहु–बेटी को रूपवती देखते थे उसे छीनकर बलात् लौंडी बना लेते थे। इस अत्याचार के कारण हिन्दुओं ने अपनी बहु–बेटियों को पर्दे में रखना आरम्भ कर दिया। अंग्रेज़ों की स्त्रियाँ पर्दा नहीं करतीं और हिन्दुओं की स्त्रियों की अपेक्षा अधिक बुद्धिमती, विदुषी, साहसी और उच्चाशयवाली होती हैं।

(पृष्ठ 351)

सन् 1878 में अजमेर में स्वामी जी के व्याख्यानों में सहस्रों मनुष्य आते थे। अजमेर के कमिश्नर, डिप्टी कमिश्नर, यूरोपीयन पादरी, प्रतिष्ठित मुसलमान प्रभृति भी आते थे। गवर्नमैण्ट कॉलेज के प्रिंसिपल ने छात्रों को व्याख्यान सुनने जाने के लिए अनुमति दे दी थी।

(पृष्ठ 451)

सन् 1879 में दानापुर में एक दिन एक सज्जन ने स्वामी जी से कहा कि 'आप इस्लाम के विरुद्ध न कहा करें।' उस समय तो स्वामी जी ने कोई उत्तर न दिया। परन्तु सायंकाल को जो व्याख्यान दिया वह आदि से अन्त तक इस्लाम के सिद्धान्तों पर ही था जिसमें उनकी तीव्र समालोचना की। व्याख्यान का आरम्भ ही इन शब्दों से किया कि ''मुझे कहा गया है कि मुसलमानी मत का खण्डन मत करो। परन्तु मैं सत्य को छिपा नहीं सकता। जब मुसलमानों की चलती थी तब वे हम लोगों का तलवार से खण्डन करते थे। अब यह अन्धेर देखो कि मुझे उनका जिह्वा मात्र से खण्डन करने से मना करते हैं। मैं ऐसा अच्छा (अंग्रेज़ी) राज्य पाकर भला किसी की पोल खोलने से कभी रुक सकता हूँ।''

(पृष्ठ 509)

सन् 1881 में रायपुर में स्वामी जी ने ठाकुर हरिसिंह से पूछा कि आपके यहाँ राज–मन्त्री कौन हैं तो उन्होंने उत्तर दिया कि शेख इलाही बख्श हैं, परन्तु वे जोधपुर गये हैं, उनके पीछे उनके भतीजे करीम बख्श (जो वहाँ उपस्थित थे) सब काम देखते हैं। यह सुनकर महाराज ने कहा कि आर्यपुरुषों को उचित है कि यवनों को अपना राज्यमन्त्री न बनाएँ, ये तो दासीपुत्र हैं। इसे सुनकर करीम बख्श और अन्य 4–5 मुसलमान, जो वहाँ बैठे थे, क्रोध में भर गये। थोड़ी देर पश्चात् सब चले गये।

(पृष्ठ 558)

भ्रान्ति निवारण – लेखक महर्षि दयानन्द

भ्रान्ति निवारण पुस्तक की भूमिका में स्वामी जी लिखते हैं – दूसरा कारण आर्यों के बिगाड़ का यह भी है कि उनको जैन लोगों ने बहुत कुछ दबाया और सत्यग्रन्थों का नाश किया। फिर इन्हीं के समान मुसलमानों ने भी अपने धर्म का पक्ष करके दु:ख दिया। और जब से अंग्रेज़ों ने इस देश में राज किया तो इन्होंने यह बात बहुत अच्छी की कि सब प्रकार की विद्याओं का प्रचार करके प्रजा को समान दृष्टि से सुधारा।

सत्यार्थप्रकाश – समुल्लास ग्यारह

महर्षि दयानन्द ने अपने महान ग्रंथ 'सत्यार्थप्रकाश' में योरोपियनों की उन्नति के कारणों के बारे में लिखा है – ''बाल्यावस्था में विवाह न करना, लड़का लड़की को विद्या–सुशिक्षा करना कराना, स्वयंवर विवाह होना, बुरे–बुरे आदमियों का उपदेश नहीं होना। वे विद्वान् होकर जिस किसी के पाखण्ड में नहीं फँसते, जो कुछ करते हैं वह सब परस्पर विचार और सभा से निश्चित करके करते हैं। अपनी स्वजाति की उन्नति के लिए तन, मन, धन व्यय करते हैं। आलस्य को छोड़ उद्योग किया करते हैं। ... और जो जिस काम पर रहता है उसको यथोचित करता है। आज्ञानुवर्ती बराबर रहते हैं। अपने देशवालों को व्यापार आदि में सहाय देते हैं। इत्यादि गुणों और अच्छे–अच्छे कर्मों से उनकी उन्नति है।''

फोन न. 0172–4010679
cg831@yahoo.com

गतांक से आगे...

भारतीय पर्व : नवाचार-विचार

● देव नारायण भारद्वाज

पर्वों के समसामयिक नवाचार–विज्ञान तभी गतिमान रहता है, जब वह अपने दोनों पंखों से उड़ान भरता है। किसी भी पक्षी का एक पंख क्रियाशील व दूसरा पंख निष्क्रिय रहता है तो वह उड़ नहीं सकता है। विज्ञान का एक पक्ष है–**"आवश्यकता आविष्कार की जननी हैं"** तो दूसरा पक्ष है–**"उपयोगिता नवाचार की भगिनी है"।** जैसा कि पूर्व में कह आये हैं–राजस्थान में निःशुल्क विपरीत किये जाने वाले धूम्ररहित चूल्हों का शोधपूर्वक निर्माण तो हुआ; प्रयोगशाला में सभी कुछ ठीक–ठाक रहा; किन्तु वे व्यवहार में नहीं लाये जा सके। व्यवहार में वे तभी आये जब एक गृहणी ने उसके पतले पाइप को तोड़कर चौड़ा किया और उसमें अधिक ईंधन के प्रवेश का प्रावधान कर लिया। विद्वानों ने इस क्रिया को परिभाषित करने के लिए हिन्दी में कई नाम दिये। नवीनीकरण, नवप्रवर्तन, नवोन्मेष के बाद अब इसके लिए नवाचार ने ही स्थायित्व प्राप्त किया है; जो Invention तथा Innovation की भाँति ही "आविष्कार एवं नवाचार" भार–व्यवहार में समतुल्य प्रतीत होता हैं। यह सुस्थिर सुम्यात सिद्धांत है कि जीवन का ऐसा कोई अंग–उपांग नहीं है, जिनमें आविष्कार व नवाचार की क्रिया का समावेश न हो। सृष्टि के आदि से इनका सिलसिला निरन्तर चला आ रहा है। भारतीय पर्वों में इनकी प्रभावशीलता स्पष्ट परिलक्षित है, जिसे विस्तारमय से सारिणी के रूप में यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

नवाचार के निर्वचन–एक–एक पूर्व और उसके संकुल पर पृथक–पृथक विचार करने से बहुत विस्तार हो जायेगा। इसलिए सामूहिक रूप से बिन्दुवार कुछ तथ्य यहाँ प्रस्तुत किये जाते हैं:–

1. सृजन के लिए संयम चाहिए, ज्ञान के स्वाध्याय से ही संस्कारों का निर्माण होता है, साहस से ही न्याय की स्थापना होती है, सात्विक पुरुषार्थ से उपार्जित श्री–लक्ष्मी की समृद्धि स्वाभिमान प्रदान करती है; और **पक्ष पात रहित सर्वोदय–समभाव ही संगठन का आधार है।** उपरोक्त पाँचों पर्वो का पञ्चामृत व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र की जीवन शक्ति है। जिसके बल पर वैदिक काल से आर्यावर्त भारत देश विश्व का सिरमौर बना रहा।

2. पश्चिम का नववर्ष प्रथम जनवरी को मनाया जाता है, जो प्रकृति–ऋतु–वातावरण में किसी नवोदय की सूचना नहीं देता है; प्रस्तुत असीमित भोग–वासना–मादकता की ओर ढकेलता है। नवसम्वत्सर पर मनाये जाने वाले नववर्ष से प्रकृति–ऋतु वातावरण वसन्त के नवोल्लास से भर जाते हैं। पादप–वनस्पति नये पुराने पत्तों को त्याग कर नई कोंपले धारण करते हैं। पशु–पक्षी सभी हर्षित होते है। मानव समुदाय भी इस वर्ष का सात्विक भावनाओं से सोत्साह स्वागत करता है।

3. भारतीय नववर्ष पर ही राजाओं के राज्याभिषेक व अन्यान्य शुभ कृत्यों का शुभारम्भ किया जाता रहा है। कृषि प्रधान भारत देश में चैत्र और आश्विन महीनों का विशेष महत्त्व है। चैत्र में रबी की तथा आश्विन में खरीफ की फसल पककर घर आती है। क्रमशः गर्मी एवं सर्द के परिवर्तन भी प्रारम्भ होते हैं। इसीलिए संयम पूर्वक नौ दिन व्रत उपवास रखे जाते हैं। मातृ शक्ति की इसी संयम साधना स्वरूप श्री राम–कृष्ण जैसे महापुरुष भारत भूमि पर अवतरित होते रहे हैं।

4. श्रावणी पर्व से पूर्व हरियाली तीज, बाद में कृष्ण जन्माष्टमी अपना यही संदेश देते हैं, कि वृक्षारोपण व वनस्पति की वृद्धि से पर्यावरण के प्रदूषण को दूर करते रहें, और **"परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्"** ध्येय पूर्ति हेतु संस्कारवान् सन्तान का निर्माण करें। विद्वान् ब्राह्मण अपने सद्ज्ञान से यजमान की रक्षा करते हैं, प्रतीक रूप में उनकी कलाई में रक्षा सूत्र बाँधते रहे हैं; साथ ही यजमान दक्षिणादान से ब्राह्मणों की रक्षा करते आये हैं। परस्पर रक्षा व शुभाशीष की भावना से यही क्रम बहिनों ने भाई की कलाई पर राखी बाँध कर आगे बढ़ाया। इतिहास साक्षी है कि भयंकर आपातकाल में स्नेह–सौहार्द का वातावरण बनाने में राखी का उल्लेखनीय उपयोग हुआ है।

5. विजयादशमी पर रामलीला करके रावण का वध व उसके कागजी स्वरूप के दहन के अभिनय दिखाये जाते हैं। वास्तव में विजयदशमी पर राम ने ऐसा नहीं किया था। इसे तो पूर्व से ही शौर्य पर्व में मनाया जाता रहा है। इसी के अनुरूप राम ने इस दिन लंका पर चढ़ाई करने का उद्योग आरम्भ किया था। बाल्मीकि एवं सन्त तुलसी दास द्वारा रचित रामायण में रावण का वध चैत्र मास में ही दर्शाया गया है। रावण–वध के बाद ही श्री राम अयोध्या लौट आये थे।

6. अयोध्या में राम के स्वागत में दीपक जलाये जाने की बात सही हो सकती है, पर ये दीपक तभी जलाये गये होंगे जब श्री राम चैत्र मास में रावण का वध करके अयोध्या लौटे होंगे। कार्तिक कृष्ण अमावस्या की अँधेरी रात्रि में सात्विक ऐश्वर्य–सम्पदा व सुख–समृद्धि के अभिनन्दन में घोर तमिस्रा को ज्योतिर्मय कर देने के मानवीय आभा–अभियान का प्रदर्शन मात्र है। दीपावली के ये पाँचों पर्व मानवीय स्वास्थ्य, नियम–संगम, प्रभा–प्रदर्शन गोधन–सम्वर्द्धन एवं बहिन–भाई के मान–मर्यादा के पुञ्ज हैं।

7. वर्ष में प्रकाश–ऊर्जा की वृद्धि की दृष्टि से सूर्य के दक्षिणायन से उत्तरायण होने का विशेष महत्त्व है, जो मकर–संक्रान्ति पर्व पर पूजन–अर्चना एवं व्यञ्जन वितरण करके प्रकट किया जाता है। इसके बाद वसन्त ऋतु के स्वागत की भूमिका बन जाती है और स्थान–स्थान पर होली की स्थापना की जाती है।

8. प्रज्वलित होली में जौ की आहुतियाँ देते समय लोग बोलते चले आ रहे हैं। **"होलिका माता की जय"।** इसे लोग हिरण्यकश्यप की बहिन एवं प्रह्लाद की बुआ के नाम से जोड़ देते हैं। बहिन होलिका ने भाई हिरण्यकश्यप की सहायता के लिए बालक प्रह्लाद को अपनी गोद में लेकर आग में जलाने का प्रयन्त किया था। ऐसी हत्यारी होलिका की यह जय नहीं है। वास्तव में यह जय उस भुने अधपके जौ या अन्न की है, जिसे होला या होलक कहते हैं, और यह जय उस अग्नि संघात की है जिसे होली के नाम से हमने यज्ञ रूप में स्थापित किया है। यही 'होली' आहुति देते हुए जौ अर्पित करते समय सम्बोधनात्मक 'होलिका माता' का रूप धारण कर लेती है। हम कृतज्ञतापूर्वक उसकी जय बोलते हैं। पर्वों पर महापुरुषों के होने वाले जन्म या निर्माण भी हमारा मार्ग दर्शन करते हैं। पर्वों के यह नवाचार हमारे जीवन में स्फूर्ति के संचार का सुदर्शन चक्र चलाते रहते हैं।

'वरेण्यम्' अवन्तिका–प्रथम
रामघाट मार्ग, ,
अलीगढ़ 202001 (उ.प्र.)

1.	नव सम्वत्सर (नया वर्ष)	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा	संयम	सृजन	ब्रह्मा द्वारा सृष्टि रचना, नवरात्रि व्रत, राम जन्म नवमी, श्री राम राज तिलक, शकारि सम्राट विक्रमादित्य राज्यारोहण विक्रमी सम्वत् आरम्भ, चेटी चन्द झूले लाल एवं संघ संस्थापक डा. हेडगेवार जयन्ती, आर्य समाज स्थापना
2.	श्रावणी (रक्षा बन्धन)	श्रावण शुक्ल पूर्णिमा	ज्ञान	संस्कार	हरियाली तीज (श्रावण शु. 3), श्रावणी रक्षा बन्धन (श्रावण पूर्णिमा), जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्ण 8)
3.	विजय दशहरा	आश्विन शुक्ल दशमी	न्याय	साहस	राष्ट्रीय शौर्य की वृद्धि की दृष्टि से अन्याय पर न्याय की विजय के लिए अत्याचारी अहंकारी रावण के वध व दहन प्रदर्शनार्थ रामलीला का आयोजन नवरात्री व्रत धारण।
4.	दीपावली	कार्तिक कृष्ण अमावस्या	श्री–लक्ष्मी समृद्धि प्रकाश	स्वाभिमान	धन्वन्तरि पूजन, नरक चतुर्दशी, गोवर्धन पूजन, भैय्यादूज, महावीर स्वामी, महार्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी रामतीर्थ का परिनिर्माण।
5.	होली	फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा	संगठन	सर्वोदय	मकर संक्रान्ति, वसन्त पञ्चमी आदि के बाद होलिकोत्सव और हिरण्यकश्यप, प्रह्लाद–होलिका का कथा प्रसंग

अग्निहोत्र का मूर्तिपूजा के साथ कुछ लेना देना नहीं

● भावेश मेरजा

कभी–कभी मूर्तिपूजा के पक्षधर झूठा आरोप लगाते हैं कि आर्य समाज के लोग भी हवन – अग्निहोत्र करते समय आग की पूजा करते हैं, इसलिए यह हवन भी मूर्तिपूजा का ही एक रूप है।

वस्तुतः यह आरोप बिल्कुल आधारहीन है।

अग्निहोत्र को मूर्तिपूजा के साथ कुछ लेना देना नहीं है।

हम आर्य समाज के सदस्य 'हवन–अग्नि' को एक जड़, भौतिक या प्राकृतिक पदार्थ के रूप में ही ग्रहण करते हैं । इसका उपयोग हवन में आहुत किए गए विभिन्न पदार्थों के सूक्ष्मीकरण– परमाणुकरण के लिए हवन की प्रक्रिया में किया जाता है। हम उस आग को नमन–वन्दन नहीं करते हैं, उसके आगे झुकते नहीं हैं। हम उस आग को ईश्वर या ईश्वर का प्रतीक नहीं मानते हैं और न ही उसकी कोई ऐसी पूजा करते हैं जिस तरह मूर्तिपूजक लोग मूर्तियों और चित्रों की तथाकथित पूजा करते हैं।

8–17 टाउनशिप, पो. नर्मदानगर,
जि. भरूच, गुजरात – 392015
मो. 9879528247

हिंदू मान्यताओं में पर्यावरण

● मोहन लाल मगो

हिन्दू धर्म की मान्यताएँ एवं परम्पराएँ प्रकृति संरक्षण के लिए कटिबद्ध है। खान–पान से लेकर रहन–सहन सब में पर्यावरण के प्रति अगाध आस्था दिखाई पड़ती है। वैदिक संस्कृति पूरी तरह से पर्यावरण में ही समाहित है। अथर्ववेद पर्यावरण के महत्त्व की व्याख्या करता है। जबकि आजकल पर्यावरण के नाम पर सबसे अधिक कुठाराघात हिंदू परम्पराओं पर ही किया जाता है। इतिहास में इसके अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं। 18 अप्रैल 2013 में आदिवासी परम्पराओं को आधार बनाकर उच्चतम न्यायालय ने एक ऐतिहासिक निर्णय में कहा था कि ओड़ीशा के रायगढ़ और कालाहाण्डी जिले की ग्राम सभा तय करेगी कि वेदांता की खनन परियोजनाओं से उनके पूजा के अधिकार का उल्लंघन हुआ है कि नहीं? आखिरकार न्यायालय ने आदिवासियों के पूजा करने के अधिकार को मान्यता दी। दरअसल वेदांता नियमगिरि की पहाड़ियों में बॉक्साइड का खनन करना चाहता था। वहाँ के निवासी इन पहाड़ियों को पवित्र और पूजनीय मानते हैं। इसी प्रकार 1997 में युकसम से पहले वाली नदी राथंग नदी में जल विद्युत परियोजना रोकनी पड़ी थी क्योंकि स्थानीय लोग इसको पवित्र मानते हैं। प्रकृति पूजक आदिवासियों की परम्पराओं में जल, जंगल और जमीन का विशेष महत्त्व है तो भी इन्हें तथाकथित विकासवादियों से आलोचना सहनी पड़ी। प्रकृति के साथ जीवंत तादात्म्य वहाँ दिखाई पड़ता है। इसीलिए हमारे ऋषियों ने कहा कि ईश्वर हमें वहाँ जन्म दीजिए जहाँ समुद्र हो, नदी हो, जल हो। ऋषियों की यह कल्पना पर्यावरण की निर्मलता पर केन्द्रित है। सच तो यही है कि धर्म कभी पर्यावरण से अलग नहीं है। धार्मिक आधार प्रकृति के पोषण के लिए है शोषण के लिए नहीं। उड़ीसा के इन आदिवासियों को क्या कहेंगे जो पर्यावरण के संरक्षण हेतु अपना जीवन तक देने के लिए तैयार हो जाते हैं।

प्रकृति पूजक हिंदू समाज को अनपढ़, पिछड़ा, गंवार की संज्ञा देने वालों को हिंदुत्व के पर्यावरण प्रेम को समझना पड़ेगा। हिंदू चिंतन में जीवन के प्रत्येक क्रिया–कलाप, कर्मकाण्ड, परम्परा, मान्यताओं, व्रत–उत्सवों को पर्यावरण से जोड़ा गया है। समझने के लिए यह मंत्र पर्याप्त है:–

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष्ँ शन्तिः पृथिवी शन्तिरापः शन्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

यजुर्वेद के इस शान्ति पाठ में हिंदू अपने किसी भी प्रकार के धार्मिक कृत्य, संस्कार, यज्ञ आदि के आरंभ और अंत में इस शांति पाठ का मंत्रोच्चारण करते हैं। इसका आशय है कि हे परमात्मा शांति कीजिये, वायु में शांति हो, अंतरिक्ष में शांति हो, पृथ्वी पर शांति हो, जल में शांति हो, औषध में शांति हो, वनस्पतियों में शांति हो, विश्व में शांति हो, सभी देवतागणों में शांति हो, ब्रह्म में शांति हो, सब में शांति हो चारों ओर शांति हो, हे परमपिता परमेश्वर शांति हो, शांति हो, शांति हो।

P-65 पाण्डव नगर
दिल्ली–110091

☞ पृष्ठ 03 का शेष

चंचल मन–चल ...

दें तो मन में सामर्थ्य नहीं कि वह स्वयं ही चला जाए। इसलिए एक बात तो गहराई से यह समझ लेने की है कि मन एक जड़ वस्तु है इसलिए इसे कहीं भी जाने या न जाने का दायित्व पूर्णरूप से हमारा है। मन के बारे में दूसरी बात यह समझने की है कि मन एक समय में एक ही काम कर सकता है। इसलिए इसकी इस कमज़ोरी को वा योग्यता को भी समझने की जरूरत है। मन को साधने के लिए ये दो बातें बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। पहली यह कि मन स्वयं जड़ है चेतन नहीं और दूसरी यह कि मन एक समय में केवल एक ही काम कर सकता है। इन दोनों बातों को हम अनुभव के स्तर पर जितना अधिक पकड़ सकेंगे हमारे लिए मन को संयमित करना उतना ही सहज और सरल हो जाएगा। मन कहीं जाता है तो हम कहते हैं कि वह स्वयं चला गया मगर गहराई से देखें तो पता चलेगा कि इसे हमने ही भेजा है। यह चिन्तन जितना गहरा उतरेगा उतना ही हम मन के प्रति सचेत हो सकेंगे। यह चिन्तन धीरे–धीरे परिपक्व बनेगा तो हमारे हाथ यह अद्भुत तकनीक आ जाएगी कि हम चाहें तो इसे कहीं भेजें और न चाहें तो न भेजें। इसी प्रकार मन की जड़ता के साथ–साथ इसकी दूसरी सीमा पर भी चिन्तन करके इसका लाभ उठाना चाहिए। क्योंकि मन एक समय में एक ही काम कर सकता है इसलिए इसे एक ही काम में व्यस्त रखने की तकनीक का हमें अभ्यास करना चाहिए। मुख्य रूप से देखें तो जितनी भी योग, ध्यान और जाप आदि की प्रक्रियाएँ हैं ये मन की इन दो सीमाओं को अनुभव के स्तर पर उतारने के लिए ही हैं। इसलिए जिन भी महापुरुषों ने मन की चंचलता को समाप्त करने की बात कही है, मुख्य रूप से इन्हीं दो बातों को मद्दे नज़र रखकर कही है। जब अभ्यास एवं विवेक और वैराग्य के द्वारा मन को यह प्रत्यक्ष करा दिया जाता है कि सांसारिक भोगों में तृप्ति नहीं है बल्कि ये हमें और अधिक अतृप्त करते हैं तो यह मन संयमित हो जाता है अन्यथा श्री कृष्ण जी का कथन है–

असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः।
वश्यात्मना तुयतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः।।
(गी. 6–36)

जिसने अपने आप को वश में नहीं किया उसके लिए योग को प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है–ऐसा मेरा मत है। परन्तु जिसने अपने को यत्न के द्वारा वश में कर लिया है वह उपायों द्वारा योग को प्राप्त कर सकता है।

संसार जैसा है उसको वैसा मानना व समझना विवेक है और विषयों से रागरहित होना ही वैराग्य है। विषयों के प्रति रागसहित जीने का हमारा इतना अधिक अभ्यास हो गया है कि हमें यह बात सहज ही में स्वीकार नहीं हो सकेगी कि विषयों से रागरहित भी हुआ जा सकता है। यह राग ही तो हमें बरबस विषयों की ओर खींचता रहता है। राग से वैराग की ओर चलना होगा। यह इतना सहज तो नहीं है मगर असंभव बिल्कुल भी नहीं है। केवल बाहर के कपड़े रंगने से काम नहीं चलेगा। भीतर से वैरागी बनने की बहुत जरूरत है। योगदर्शन इस बात को इस प्रकार कहता है–**दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्य वशीकारसंज्ञा वैराग्यम।।** (1–15) अर्थात् देखे हुए और सुने विषयों से राग रहित होना ही वैराग्य है। सबसे पहले इन रागों को समझने की जरूरत है। संसार के जितने भी विषय हैं उनसे व्यक्ति को कभी तृप्ति नहीं मिल सकती है। भोगों को भोगने से आजतक कोई भी तृप्त नहीं हुआ है। ये सभी भोग तो मात्र क्षणिक सुख देने वाले ही हैं। इन्हें भोगने के बाद व्यक्ति फिर प्यासे का प्यासा ही रह जाता है मगर हैरानी तो इस बात की है कि व्यक्ति जहाँ से प्यासा लौटता है, तृप्ति के लिए पुनः पुनः वहीं पर जाता है। इसलिए इस बात को गहराई से समझने की जरूरत है कि जहाँ हमें तृप्ति मिल ही नहीं सकती वहाँ के प्रति यह राग क्यों? जब हम परमात्मा की तुलना में सांसारिक–विषयों को परखते हैं तो यह पल भर के लिए भी टिकने वाले नहीं हैं। इसलिए व्यक्ति को उन वस्तुओं के लिए, जो उसे परमात्मा, आध्यात्मिकता और तृप्ति से दूर ले जाती हैं अपने भीतर वैराग पैदा करना चाहिए... किसी भी वस्तु या विषय के साथ चिपकने का नाम ही राग है और इससे मुक्त हो जाना ही वैराग्य है। पता नहीं इन विषय भोगों से हम कितने ही जन्मों से चिपके हुए हैं इसलिए इनसे छूटने में समय तो लगेगा ही। तनिक संघर्ष से गुजरना होगा... यह सब अपने मन को साधने से ही होगा

महर्षि दयानन्द धाम,
महादेव,सुन्दरनगर–175018, हि.प्र.
94180–53092
chaitnyamuni@gmail.com

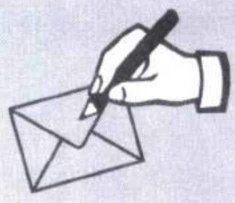

पत्र/कविता

अपने परिवारजनों के जन्म दिवस व विवाह वर्षगांठ आदि कैसे मनायें

आर्यसमाज के विचार, मान्यतायें एवं सिद्धान्त सत्य एवं यथार्थ हैं। शिक्षा व संस्कार ही किसी समाज व देश सहित जाति की रक्षा करते हैं। मनुष्य अपने जीवन के जन्म दिवस, विवाह की वर्षगांठ आदि महत्वपूर्ण अवसरों पर प्रथम कर्तव्य के रूप में तो ईश्वर व आत्मा के स्वरूप पर विचार कर ईश्वर के जीवात्मा पर उपकारों का चिन्तन करें। ऋषि दयानन्द के लघु ग्रन्थ आर्याभिविनय के कुछ मन्त्रों के अर्थो का अध्ययन व उन पर विचार करे। सत्यार्थप्रकाश के सातवें एवं प्रथम समुल्लास के कुछ भाग का पाठ भी करें। सन्ध्या के मन्त्रों का अर्थ सहित पाठ व जितना हो सके ईश्वर के सत्यस्वरूप का ध्यान कर उससे स्तुति-प्रार्थना-उपासना के आठ मन्त्रों से प्रार्थना करे। अपने जन्म दिवस, विवाह की वर्षगांठ आदि उत्सव मनाते हुए हमें विचार, चिन्तन, मनन करने के साथ विवेकपूर्वक सत्य ऋषि परम्पराओं का अनुकरण व अनुसरण करना चाहिये। ऐसा करने से निश्चय ही हमारी आत्मा और जीवन की उन्नति होगी और इससे हमारा परजन्म भी सुधरेगा व उन्नति को प्राप्त होगा।

मनमोहन कुमार आर्य
196 चुक्खूवाला-2
देहरादून-248001
मो. 9412985121

****

भारत ने हर दम किया जग में परहित होम

वे चपटा कहते रहे हम भूगोल-खगोल।
भारत भारत ही रहा पंख ज्ञान के खोल।।

असतो मा सद्गमय कह परिचय दिया विराट।
सत्य-स्नेह मल शीश पर केश दिये खल्वाट।।

तमसो मा ज्योतिर्गमय जीवन सूर्य-समान।
एक हाथ में है कमल दूजे तीर-कमान।।

मृत्योर्मा अमृतंगमय जिया पिया सत-सोम।
भारत ने हरदम किया जग में परहित होम।।

पहले कभी न छोड़ते करते खुलकर प्रीति।
पीछे कभी न छोड़ते यह भारत की रीति।।

मिल-जुलकर यदि हम चलें क्या है पापिस्थान।
इक थप्पड़ में छाप दें मुख पर हिन्दुस्तान।।

संस्कृत बिन संस्कृति नहीं संस्कृति बिन क्या प्रेष्य।
बिना वीरता वीर क्या निरुद्देश्य-उद्देश्य।।

संगच्छध्वं-सोम पी बनों सूर्य से शूर।
बलिदानों की भूमिका लाती रंग जरूर।।

अपने 'चंदन' का दिया तिलक 'उदय' के भाल।
'पन्ना' पर वारे जगत् हीरे-मोती-लाल।।

वर्षा सर्दी धूप में खड़े लखन-सिय-राम।
भारत माता आज भी आहत-दुखी-गुलाम।।

डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी
ए-13/14 सेक्टर-11, रोहिणी
दिल्ली-110085

हिंदू धर्म को पुनः अपने वेद से न जोड़ा गया, तो मैं ही अपना धर्म बदल लूँगा!

दुनिया के किसी भी देश की सांस्कृतिक-विशेषता और पहचान, वहाँ के मूल धर्म से ही जुड़ी होती है, लेकिन हमारे भारत देश में, सदियों तक विदेशो-कुशासनों से कु-प्रभावित होकर यहाँ की वैदिक संस्कृति और सत्य-सनातन धर्म आज इतना अधिक विद्रूप हो गया है, कि विश्व-आदर्श कहाने वाले महान आर्यो (प्राचीन हिंदुओं) का यह भारतवर्ष अब तो वैसा जरा भी कहीं नहीं दिखता।

विश्व-मानवतावादी हमारे इस महान धर्म को पंगु बनाकर, धार्मिक-दलालों (ज्योतिषी, तांत्रिक, पंडे-पुरोहित-धर्माचार्यों) ने तरह-तरह के बने मंदिरों में ही कैद कर करके इस धर्म को ही गुलाम बना दिया है! यदि इन धार्मिक-व्यापारियों (धूर्त, ठग, पाखंडियों) के चंगुल से निकलकर, यह धर्म पुनः अपने वेद (वैदिक मान्यताओं) से जुड़ जाये, तो सिर्फ हमारे देश की ही सामाजिक-दशा नहीं सुधरेगी, बल्कि सभी विश्व-धर्मों से हमारे आपसी रिश्ते भी इतने मधुर हो जायेंगे, कि इस विज्ञान-युग में भी हमारा भारतीय वैदिक हिंदू धर्म ही विश्व बन जायेगा!

मैं खुद भी एक अनुभवी पुश्तैनी पुरोहित-धर्माचार्य होने के नाते, भली भांति जानकर ही, अपने धर्म में चिपकाये गये सारे अवैदिक-पाखंडों को मिटाने हेतु वर्षों से लगातार पुस्तक, प्रपत्र, कविता, लेख, भाषण, प्रवचन, टी.वी., अखबार, सोशल मिडिया आदि से भी लिखते-लिखते व बोलते-बोलते भी अब थक गया हूँ।

चूंकि, 'राज-सत्ता' और 'धर्म-सत्ता' परस्पराश्रित होता है। अतः मैं अब गृहमंत्री श्री अमित शाह जी और तीर्थों का प्रांत-उ.प्र. के मुख्यमंत्री श्री योगी जी से ही दो टूक निवेदन करते हुए, आप सबको भी अपनी दर्दभरी 'राम-कहानी' ई-मेल से भी भेज-भेजकर कर्तव्य बोध ज्ञापित करता हूँ कि गंगा-सा गंदा हो चुके हिंदू धर्म के संशोधनार्थ देश के बहुसंख्यक-धर्माचार्यों (विद्वानों) की सभा बुलवाकर अब 'धार्मिक-क्रांति' के रूप में शीघ्र ही हिंदू धर्म को एकेश्वरवादी वेद से पुनः न जोड़ा गया, तो चंद्रगुप्त, अशोक, कालापहाड़, अंबेडकर, पं राहुल सांकृतायन आदि सा मैं भी अपनी असफलता और हिंदूधर्म व स्थानीय-हिंदूसमाज की भ्रष्टता व उत्पीड़न से तंग आकर, अब अपना ही धर्म-परिवर्तन कर लूँगा! क्योंकि मेरा भी प्रण है कि हिंदू धर्म में झूठ-पाखंड ही रहे, या मैं रहूँ। चाहे हम कितना भी कष्ट अभाव में क्यों न रहें, किंतु अब इन झूठ-पाखंडों के संगसुख में जरा भी नहीं रह सकते।

पं आर्य प्रहलाद गिरि
शिव मंदिर-निंगा, आसनसोल-713370
मो. 9735132360

****

गो-घृत संजीवनी है शरीर के लिए

* गो-घृत शीतकाल में वृद्धजनों को गरम दूध में मिलाकर पीने से लाभ होगा।

* शीतकाल में नवजात शिशुओं को निमोनिया से बचाव हेतु छाती पर गो-घृत की मालिश श्रेष्ठ होती है।

* त्वचा के जलने पर गो-घृत लगावें लाभ होगा।

* समस्त भोजन पकाने में केवल गो-घृत का प्रयोग उच्च रक्तचाप व पारिवारिक शान्ति प्रदान करता है।

* सौ ग्राम गो-घृत के उपयोग का अर्थ है कि आप दस गायों का पालन कर रहे हैं।

* गो-घृत और मिश्री, सौंफ का सम भाग मिश्रण 200 ग्राम गर्म दूध में प्रयोग करने से शरीर चुस्त रहता है।

* रात्रि में सोते समय आँखों की पलकों पर गो-घृत की मालिश करने से नींद अच्छी आती है तथा आंखों की रोगों से दूरी बनाती है।

कृष्ण मोहन गोयल
113-बाजार कोट
अमरोहा-244221
9927064104

****

डी.ए.वी. कॉलेज, बठिण्डा में शीतकालीन सत्र का शुभारम्भ यज्ञ के संग

डी.ए.वी. कॉलेज, बठिण्डा में शीतकालीन सत्र का शुभारम्भ व मासिक हवन परम्परा का निवर्हन हवन किया गया। मंत्रोच्चारण से यज्ञ करते हुए 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की कामना से यज्ञाग्नि में आहुतियाँ डालकर वैदिक परम्परा का पालन किया गया। कॉलेज के हिंदी विभाग व आर्य समाज द्वारा सम्पूर्ण प्रबंध उचित रूप से किया गया।

हवन में यज्ञमान की भूमिका का निवर्हन श्री बलदेव कृष्ण (सुपरीटैंडैंट जरनल दफतर) ने किया। सम्पूर्ण स्टाफ ने इस हवन में आहूतियां डाल कर ईश्वर से कॉलेज की उन्नति व तरक्की के साथ-साथ विश्व कल्याण की कामना की।

कॉलेज प्राचार्य डॉ. संजीव शर्मा ने इस आयोजन पर प्रसन्नता अभिव्यक्त की व श्री बलदेव कृष्ण को शुभकामनाएं दीं व उनके स्वास्थ्य की प्रार्थना की। प्राचार्य महोदय ने कहा कि नव वर्ष के इस प्रथम हवन के साथ शीतकालीन सत्र का शुभारम्भ किया जा रहा है। उन्होंने सम्पूर्ण स्टाफ को प्रेरित किया कि कर्त्तव्य निष्ठा व लग्न से गत वर्षों की भांति ही विविध कार्यों में जुटे रहें व कॉलेज की उन्नति के लिए तत्पर रहें। उन्होंने ईश्वर से सम्पूर्ण स्टाफ व उनके परिवार के उत्तम स्वास्थ्य के लिए परमपिता परमात्मा से मंगलकामना की।

कॉलेज उपप्राचार्य प्रो. प्रवीण कुमार गर्ग ने श्री बलदेव कृष्ण को इस यज्ञ के लिए शुभकामनाएं दी व प्राचार्य डॉ. संजीव शर्मा को विश्वास दिलाया कि गत वर्षों की तरह सारे प्राध्यपक इस वर्ष भी कॉलेज की उन्नति व अपने कर्म के प्रति प्रतिबद्ध रहेंगे।

आर्य समाज कोटा ने विज्ञान नगर में आयोजित की वैदिक संगोष्ठी

आर्य समाज कोटा द्वारा विज्ञान नगर में आयोजित एक वैदिक गोष्ठी में बोलते हुए पूर्व लोकायुक्त श्री सज्जन सिंह कोठति ने कहा "आर्य समाज ने जन-जन को जीवन जीने की कला प्रदान की है। ऋषि दयानंद के उपकारों से आज संपूर्ण विश्व में आर्य विचारों व विद्वानों की धूम मची है। आर्य समाज में सामाजिक कार्यो के साथ-साथ आध्यात्मिक कार्यों की दिशा में भी काम किया जा रहा है।"

श्री कोठारी ने बताया कि एक गायत्री मंत्र को यदि अर्थ सहित उच्चरित किया जाए तो वही मानव कल्याण का प्रथम सोपान है। आत्मिक उन्नति ही हमें उन्नति के शिखर पर लेजा सकती है। जिसकी आज समाज में बहुत आवश्यकता है।

इस अवसर पर आर्य समाज के प्रतिनिधियों द्वारा श्री कोठारी साहब व उनकी धर्मपत्नि का अभिनंदन किया गया।

संगोष्ठी में अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि कोटा में व्यक्तित्व वैदिक संस्कार शिविर आयोजित किए जा रहे हैं जिससे समाज में सकारात्मक सोच जा रही है।

गोष्ठी में आर्य समाज के संगठनात्मक एवं आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा की गई। विज्ञान नगर में आयोजित इस गोष्ठी में कुन्हाड़ी रामपुरा गायत्री विहार, खेड़ा रसूलपुर, महावीर नगर, तलवण्डी के प्रधान तथा मंत्रियों के अतिरिक्त राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यवाहक विधि सलाहकार एडवोकेट चंद्रमोहन कुशवाह, डा. वेद प्रकाश गुप्ता, पतंजलि योग समिति के जिला प्रभारी प्रदीप शर्मा, ने विचार व्यक्त किए।

शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

आर्य समाज, राजपुर देहरादून का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज राजपुर-देहरादून के प्रथम वार्षिकोत्सव पर यज्ञ, भजन एवं प्रवचन हुए। समापन दिवस पर **आर्यसमाज के वरिष्ठ विद्वान पं. सूरतराम शर्मा ने कहा कि देश के युवाओं को संस्कार नहीं दिये जा रहे हैं। नैतिक शिक्षा के पाठ से हमारी बाल व युवा पीढ़ी वंचित है। देश को धर्म निरपेक्ष घोषित कर दिया गया। देश को धर्म सापेक्ष घोषित करना चाहिये था। धर्म के आधार पर तो देश का विभाजन हो गया था फिर धर्म निरपेक्षता का कोई औचित्य नहीं था। यह हमारे नेताओं से भूल हुई है।**

पंडित सूरतराम जी ने कहा कि हमारी नई पीढ़ी धर्म के नाम पर गुमराह की जाती है और वह गुमराह है भी। उसे धर्म का सत्य और यथार्थ स्वरूप विदित नहीं है।

पं. सूरतराम शर्मा जी ने श्रोताओं को धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझने की अपील की। **धर्म उन गुणों व सत्य आचरणों को कहते हैं जिन्हें मनुष्य को धारण करना चाहिये।** धारण किया सद्धर्म हमारी रक्षा करता है।

पं. सूरतराम जी के पश्चात डीएवी महाविद्यालय की संस्कृत विभाग की प्रोफेसर डा. सुखदा सोलंकी जी का सम्बोधन हुआ।

☞ *पृष्ठ 01 का शेष*

डी.ए.वी. सेक्टर-49, गुरुग्राम ...

'पूनम की पाठशाला' नामक कार्यशाला की पहल बहुत व्यापक उद्देश्य को लेकर की गई है। इसका यह उद्देश्य है कि शिक्षकों को वैदिक एवं नैतिक मूल्यों का संवाहक बनाना ताकि वे विद्यार्थियों में इन गुणों का संचार कर सकें। इस प्रकार ज्ञान का प्रकाश चारों ओर फैलेगा और सम्पूर्ण मानवीय सभ्यता विकसित होगी।

माननीय पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी ने अपने संबोधन में बच्चों में नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों का विकास करने पर विशेष बल दिया। उन्होंने शिक्षकों को संबोधित करते हुए सत्य के विभिन्न स्वरूपों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की और उन्हें अपने जीवन में अपनाने के साथ-साथ विद्यार्थियों में भी प्रेषित करने के लिए प्रेरित किया।

अंत में विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती चारु मैनी जी ने पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी सहित सभी गणमान्य अतिथियों का धन्यवाद किया और इस आशा के साथ इस कार्यक्रम का अंत किया कि शीघ्र ही 'पूनम की पाठशाला' की अगली कड़ी में सभी शिक्षकों को सम्मिलित होने का सुअवसर पुनः प्राप्त होगा।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 29/30-01-2020

डी. ए. वी. वेलचेरी, चैन्नई ने लगाया रक्तदान शिविर

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा तमिलनाडू के तत्त्वावधान में डी. ए.वी. पब्लिक स्कूल वेलचेरी में एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर जलियाँवाला बाग की 100 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में उन शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि स्वरूप लगाया गया।

प्रातःकाल 9 से सांयकाल 3 बजे तक चलने वाले इस कल्याणकारी शिविर में रोटरी सेंट्रल टी.टी.के. वी.एच.एस ब्लड बैंक, तरमनी, चेन्नई द्वारा स्टरलाइज्ड उपकरणों, कुशल और अनुभवी चिकित्सकों एवं उनके सहयोगियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इस शिविर में 78 रक्त दाताओं ने 78 यूनिट रक्तदान करके इस कार्य में

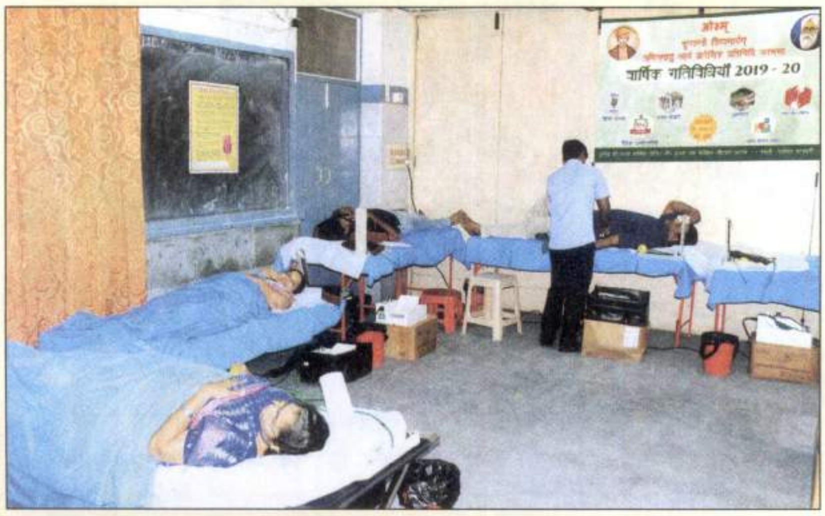

अपना सहयोग दिया। रक्तदाताओं में स्कूल के सभी वर्ग के कर्मचारी थे। अध्यापकगणों के साथ – साथ स्कूली अभिभावकों ने भी समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी निभाते हुए इंसानियत का फर्ज़ अदा किया। सभी वर्ग के लोगों द्वारा दिया गया सहयोग इस कार्य की पूर्णता का आधार बना।

इस अवसर पर अपने संबोधन में स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती मीनू अग्रवाल ने कहा आर्यसमाज का मेरूदंड है स्वस्थ एवं सभ्य समाज की आधारशिला रखना। इसी भावना को मद्देनज़र रखते हुए भविष्य में भी डी.ए. वी. पब्लिक स्कूल की चेन्नई शाखा निरंतर प्रयत्नशील है और रहेगी। उन्होंने कहा

दान शब्द का मूलमंत्र
मानवता की पराकाष्ठा है
आज रक्तदान करने वाला
ईश्वर समान जन्मदाता है।

जिया लाल मित्तल डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल गुरदासपुर में धूम- धाम से मनाया गया स्कूल का वार्षिक समारोह

जिया लाल मित्तल डी. ए .वी पब्लिक स्कूल गुरदासपुर में वार्षिक उत्सव का आयोजन किया गया! इस अवसर पर मुख्यातिथि श्री जे.पी शूर जी (डायरेक्टर पब्लिक स्कूल एवं एडिड स्कूल) रहे। कार्यक्रम का आरम्भ डी.ए.वी. गान और ज्योति प्रज्ज्वलित करके किया गया।

स्कूल के प्रिंसिपल श्री राजीव भारती ने स्कूल की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की और कहा स्कूल से उत्तीर्ण विद्यार्थी देश और विदेशों में उच्च कॉलेजों और यूनिवर्सिटीज में शिक्षा ग्रहण कर रहे है। प्रिंसिपल राजीव भारती जी ने बताया कि बच्चों को अलग से खेलों का प्रशिक्षण दिया जाता है। और सभी पर्वो को और विशेष दिनों को मनाया जाता है।

स्कूल चेयरमैन श्री बाल कृष्ण मित्तल ने कहा कि डी.ए.वी. 135 वर्षों से शिक्षा

के क्षेत्र में आपकी सेवा के लिए कार्यरत है। हमारे वर्तमान प्रधान आर्य रतन डॉ. पूनम सूरी जी 1000 के करीब शैक्षणिक संस्थाओं का संचालन कर रहे हैं। उन्होंने सभी बच्चों को टाइम मैनजमेंट के बारे में समझाते हुए कहा कि हर कार्य नियत समय करके ही हम सफल हो सकते हैं।

डॉ. नीलम कामरा जी (रीजनल अफसर) ने सभी का अभिवादन करते हुए कहा कि आज का कार्यक्रम अत्यन्त बढ़िया ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य अतिथि श्री जे.पी शूर जी ने कहा कि डी.ए.वी. का मुख्य उद्देश्य प्राचीन को नवीन के साथ, जोड़ना है जिसकी झलक आज के इस कार्यक्रम में दिखाई दे रही है। उन्होंने कहा कि डी.ए.वी. संस्थाएं अन्य संस्थाओं से भिन्न इसलिए हैं क्योंकि हम संस्कारी डॉक्टर, इंजीनियर ही पैदा नही कर रहे है बल्कि विद्यार्थी के पूर्ण विकास के लिए प्रयासरत है। उन्होंने सभी विद्यार्थियों को मेहनत और लगन से आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर स्कूल के मेधावी छात्रों को पुरस्कार वितरण किए गए इसके इलावा इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा स्कूल के नए जूनियर ब्लॉक (चरपी चौंप्स) का उद्घाटन भी किया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रीय गान द्वारा किया गया।

डी.ए.वी. पक्खोवाल ने मनाया वातावरण शुद्धि दिवस

डी.ए.वी. पक्खोवाल विद्यालय लुधियाना में स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान दिवस पर वातावरण शुद्धि दिवस का आयोजन किया गया। इस दिवस पर पंचकुण्डीय यज्ञ किया गया। कक्षा छठी व सातवीं के छात्रों के यज्ञ की पवित्र अग्नि में श्रद्धा से भरी हुई आहुतियाँ दी।

विद्यालय की प्रधानाचार्या सतवंत कौर भुल्लर ने शुद्धि के अग्रदूत स्वामी श्रद्धानन्द जी के बारे में बताते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी धर्म के प्रति अत्यधिक श्रद्धावान व निष्ठावान थे। हमें भी उन्हें अपना आदर्श मानकर उनके गुणों को आत्मसात करना चाहिए।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस को वातावरण शुद्धि दिवस के रूप में मनाकर स्वामी श्रद्धानन्द जी को सच्ची श्रद्धांजलि दी गई। विद्यालय परिसर में प्रिंसिपल, बच्चों व अध्यापकों ने साथ मिलकर नए पौधे लगाए व उनकी देखभाल करने का भी संकल्प लिया।

श्रीमती भुल्लर ने अध्यापकों व छात्रों को पौधे लगाकर वातावरण को स्वयं स्वच्छ रखने व लोगों को वातावरण की स्वच्छता हेतु जागरूक करने के लिए भी प्रेरित किया। कचरे के निपटारे व कूडेदान के सही उपयोग को दर्शाती पी पी टी व वीडियों बच्चों को दिखाई गई। जिसे देख बच्चों ने विद्यालय को जीरो वेस्ट जोन बनाने के लिए शपथ ग्रहण की। एक मुहीम के तहत प्रत्येक विद्यार्थी अन्य दो व्यक्तियों को पर्यावरण को बचाने के लिए प्रेरित करेगा।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**